23-2

इसके पश्चात जब उसे आज्ञा मिलती है कि काव्य का विषय रानी वधुओं की इच्छानुसार होना चाहिए तो वह यह कह कर कि मैं सीमाबद्ध होकर काव्य रचना नहीं कर सकता - नवरत्न कवियों के मुख्य पद से त्याग पत्र दे देता है किन्तु दूसरी ~~तरफ~~ और कालिदास के शान्ति दूत कार्य को न सह सकने के कारण सेनापति अपने कार्य से मुक्ति चाहता है। विक्रमादित्य उसे ऐसा करने से रोकता है और कालिदास को दूत कार्य से त्यागपत्र दे देने की आज्ञा देता है। इस प्रकार सम्पूर्ण बन्धनों से मुक्त हो कर कालिदास रघुवंश नामक काव्य रचना प्रारम्भ करता है। यही पर नाटक की समाप्ति होती है।

यो यदर्थं प्रार्थयते तदर्थं चेहते क्रमात् सोऽवश्यं तदवाप्नोति न चेच्छ्रान्तो निवर्तते।
(न चेदर्धात निवर्तते — योगवाशिष्ठ।

Introduction / सौन्दर्य का नवीन दृष्टिकोण, नये मापदण्ड (ट्रैजेडी का महत्व)

(भाव पक्ष कला पक्ष परम्परा संरक्षण, नवीन (दृष्टिकोण) प्रयोग अनुवाद की विशेषता (भारतीय भाषाओं से और विदेशी भाषाओं से अनुवाद) प्राचीन ऐतिहासिक नाटकों के नवीन रूप (उससे प्रभावित) (ध्रुवा शाकुन्तलम् उन्मत्त कीचकम्' अर्वाचीन समस्यायें (रंगमञ्च की कठिनाई सिनेमा - एक बाधा समय का अभाव) विदूषक का परिहार - हास्य की परम्परागत कमी आधुनिक कृति में भी दृष्टिगोचर. सामयिक प्रभाव)

चतुर्थ अङ्क — उज्जयिनी में आकर कालिदास सम्पूर्ण वृत्तान्त बताता है, राजा ~~का~~ विक्रमादित्य उससे अधिक स्नेह करने लगता है और उसे कुन्तल देश में दूत बना कर भेजता है, किन्तु उसके बाहर चले जाने पर पण्डितराज फिर एक षडयन्त्र रचता है। कालिदास को विदर्भ देश का गुप्तचर घोषित कर देता है। कालिदास के गृह में विदर्भ देश से आई हुई सरस्वती रहती है, इसी को सबल प्रमाण बना कर पण्डितराज राजा विक्रमादित्य के पास आता है। नृप विक्रमादित्य पूछते हैं कि यदि पण्डितराज की बात सच हुई तब तो कालिदास दण्डित होगा ही लेकिन यदि पण्डितराज की बात झूठी सिद्ध हुई तो उसे कालिदास द्वारा निर्धारित दण्ड स्वीकार करना पड़ेगा। पण्डितराज यह दोनों बातें स्वीकार कर लेता है। सरस्वती को राज्य सभा में बुलाया जाता है, वह अपने विवाह का रहस्य खोलती है और अन्य सभी शंकाओं का भी समुचित उत्तर देती है, पण्डितराज का आरोप असत्य सिद्ध होता है और उसे उज्जयिनी से बाहर चले जाने का दण्ड मिलता है।

पञ्चम अंक — कालिदास की समस्त सेवाएं और रघुवंश को छोड़ कर अन्य सभी रचनाओं के सम्मानार्थ नृप विक्रमादित्य उसका अभिनन्दन करता है उसे अपनी सभा का सर्वश्रेष्ठ कवि नियुक्त करता है। विक्रमादित्य के मतानुसार कवि एक सैनिक से अधिक श्रेष्ठ और महत्वपूर्ण है क्योंकि उससे सबकी रक्षा होती है और वह नृपों के शौर्य के गौरव अपने काव्य द्वारा शाश्वत बना देते हैं। किन्तु सेनापति की आशंका कि एक योद्धा भी देश की उतनी ही रक्षा करता है जितनी एक कवि उसके गौरव की रक्षा के लिए करता है। कालिदास को इससे बड़ी व्यथा होती है और वह

के पास जा रही होती है तो रास्ते में गोपाल और गोविन्द जो पण्डितराज और रानी वसुन्धरा द्वारा भेजे हुए दूत हैं (जिससे वे कालिदास की गतिविधि का पता लगा सकें) उसे छेड़ते हैं तथा उससे विवाह करने की इच्छा प्रकट करते हैं। सरस्वती दुःखी हो कर रघुनाथजी की प्रार्थना करती है तथा सहायतार्थ उनका आह्वान करती है। किन्तु इतने में कालिदास का भाई रघुनाथ आकर उसे उन दुष्टों के चंगुल से बचाता है। सरस्वती, रघुनाथ के इस कृत्य से बहुत आभारी होती है। कालिदास के पास जाकर वह ~~कालिदास~~ उसे बताती है कि सरस्वती उसकी प्रियसखी है और वह कालिदास का सभी प्रकार से हित करेगी। इतने में रघुनाथ भी अपने भाई के पास आता है। कालिदास अपने भाई से सरस्वती का परिचय कराता है जो पहले ही उससे मिल चुकी होती है। अलका के मुख से अपने देवर की प्रशंसा सुन कर वह सुभा है उससे स्नेह करने लगी थी, अब साक्षात्कार हो जाने पर प्रेम के बन्धन अधिक दृढ़ हो गये। सरस्वती कालिदास को युक्ति पूर्वक बन्धन से मुक्त कर देती है, कालिदास रघुनाथ के वस्त्र पहन कर बाहर निकल आता है रघुनाथ कालिदास के वस्त्र पहन कर स्वयं उसकी जगह बन्धनागार में रहता है। वहीं साथ साथ रहते हुए रघुनाथ और सरस्वती परस्पर गन्धर्व रीति से विवाह बन्धन में बंध जाते हैं।

तृतीय अङ्क में— इधर कालिदास ~~से~~ का कोई वृत्तान्त न मिलने के कारण ~~विक्रमादित्य~~ उसके बन्धन में डाले जाने का संवाद उससे सुन कर विक्रमादित्य सेना द्वारा विदर्भ पर चढ़ाई करना चाहता है किन्तु वृथा रक्तपात न हो इसलिए वे युद्ध करने के अधिक इच्छुक भी नहीं हैं। ~~इधर~~ कालिदास की लम्बी अनुपस्थिति में पण्डितराज उसके ग्रन्थ चोरी करने का उपक्रम करता है और रात्रि को गोविन्द भट्ट को अलका के घर भेजता है। कालिदास चुपचाप विदर्भ से छूट कर के बन्धनागार से छूट कर उसी रात को घर पहुंचता है। ~~चुप~~ वह आकर अलका को आश्चर्यचकित कर देना चाहता है किन्तु घर में चोर को घुसा हुआ देखकर उसे मार कर पकड़ लेता है। अलका भी जाग पड़ती है उसे मूर्ख जानकर वह कालिदास से छोड़ देने को कहती है। कालिदास पहले तो नगर रक्षक के रूप में अपने आपको बताता है बाद में अपने वास्तविक रूप में स्थित हो कर अलका के सम्मुख होता है। बिछुड़े हुए पति पत्नी बड़े मिल कर बड़े आनन्दित होते हैं।

तथा अन्य काव्य रचना करते हैं। यहां भी कालिदास की रचना श्रेष्ठतर सिद्ध होती है और रानी वसुधा भी इस बात को मान लेती हैं किन्तु फिर भी पण्डितराज द्वारा उनके मन में जो ईर्ष्या के बीज बोये गये थे उनकी समाप्ति नहीं होती। राजा विक्रमादित्य को अमात्य राज से मालूम होता है कि विदर्भ का राजा कोसलाधिपति से मिलकर मालव के विरुद्ध षडयन्त्र कर रहा है. इसलिए यह निर्णय होता है कि विदर्भ देश में किसी न किसी को राजदूत बनाकर भेजना चाहिए। रानी वसुधा को लिए कालिदास से छुटकारा पाने का अच्छा अवसर मिलता है अतः वह राजा को कालिदास को विदर्भ में राजदूत बनाकर भेजने की सलाह देती है. साथ ही रानी का यह प्रयत्न भी होता है कि ~~जिससे~~ कालिदास उज्जयिनी से बाहर भी चला जाय और पुनः लौट कर भी न आ सके। राजा विक्रमादित्य के आदेश को कालिदास ~~बली~~ बड़ी प्रसन्नता पूर्वक शिरोधार्य करके अपने घर जाता है। पण्डितराज अपने एक साथी द्वारा कालिदास के विदर्भ देश गमन के पश्चात ~~उसकी अनुपस्थिति में उसके गृह से~~ → उसके द्वारा रचित ग्रन्थों की चोरी करने की योजना बनाता है। वसुधा उसी साथी को विदर्भ देश में कालिदास की गतिविधि की देखरेख के लिए भेजती है। विदर्भ देश में कालिदास अपने भाई रघुनाथ को भी साथ ले जाता है।

द्वितीय अङ्क में — विदर्भ का राजा सुकीर्ति कालिदास के आने से बहुत उद्विग्न होता है। वह कालिदास से कुछ रहस्य की बातें जानना चाहता है लेकिन उसे कालिदास से कुछ ज्ञात नहीं हो सकता इसलिए उसे अधिक निराशा होती है। ~~और भय~~ विदर्भ नृप सुकीर्ति को यह मालूम हो जाता है कि कालिदास कोशलेश्वर के रहस्य को जानता है, यह सोचकर कि कहीं कोसलेश्वर का रहस्य कालिदास उज्जयिनी में न बता दे, विदर्भ नृपति कालिदास को बन्धनागार में डाल देता है। कालिदास से कुछ अधिक रहस्य ज्ञात हो सके इसलिए नृत्य और संगीत में कुशल सरस्वती नामक कन्या को कालिदास के पास रहने के लिए भेज देता है। इस कार्य के लिए वह विदर्भ ~~[illegible] राज्य की मुद्रा से अंकित युक्त~~ राजचिह्न से युक्त मुद्रा भी देता है जिससे सरस्वती को कार्य में सुविधा हो। किन्तु संयोग की बात कि सरस्वती कालिदास की पत्नी अलका की प्रिय सखी है, जब वह (~~[illegible]~~ कालिदास

कथानक

अङ्क: महाकवि कालिदास मालव नरेश के यहां परराष्ट्र कार्यालय

विक्रम संवत्सर की पांचवी शताब्दि मे मालव नरेश द्वितीय चन्द्रगुप्त उज्जयिनी मे शासन करते थे कालिदास नामक एक व्यक्ति उनके परराष्ट्र कार्यालय मे उपसचिव के कार्य करता था और साथ ही कवि भी था। इसीलिए नृप का प्रियपात्र था। ऋतुसंहार नामक काव्य की रचना भी उसी ने की हुई थी। किन्तु विक्रमादित्य की नवरत्न परिषद का प्रमुख पण्डितराज इसी कारण उससे जलता था। पण्डितराज रानी वसुधा के पिता की राजधानी उदयपुर से लाये गये थे, इसलिए रानी को भी पण्डितराज से ही अधिक स्नेह था और वे भी कालिदास को अधिक ~~नहीं~~ आदर नहीं करती थी।

प्रथम अङ्क मे — वसन्त उत्सव की तैय्यारियां हो रही है. रानी वसुधा नृप विक्रमादित्य की प्रतीक्षा में व्यग्र हो रही हैं लेकिन विक्रमादित्य के आने मे बराबर विलम्ब हो रहा है. इतने मे पण्डितराज आकर वसुधा से कहता है कि आज नृप की सभा मे कालिदास ने उनका अपमान किया है। वसुधा को बहुत क्रोध आता है और वे सोचती हैं कि ऐसा उपाय करना चाहिए जिससे कालिदास उज्जयिनी मे न आ सके।

(यो यदर्थं प्रार्थयते तदर्थं चेहते क्रमात सोऽवश्यं तदवाप्नोति न चेच्छ्रान्तो निवर्तते। (न चेदर्धात निवर्तते — योगवासिष्ठ)

इतने मे महाराज विक्रमादित्य कालिदास द्वारा की गई समस्यापूर्ति की प्रशंसा करते हुए प्रवेश करते हैं और रानी से कहते हैं कि कालिदास पण्डितराज से अधिक कुशल है। महारानी वसुधा को राजा की इस उक्ति से अधिक प्रसन्नता नहीं होती क्योंकि वे मन ही मन कालिदास से अप्रसन्न है। इतने मै ही कालिदास भी वहीं आ जाते हैं, क्योंकि उन्हे विदर्भ के षड्यन्त्र की सूचना मिल जाती है। जब तक वहां अमात्य और सेनापति नहीं आते तब तक महाराज विक्रमादित्य आदेश देते हैं कि वे पण्डितराज और कालिदास की काव्य प्रतियोगिता हो और रानी वसुधा स्वयं निर्णय करें कि श्रेष्ठ कौन है। दोनो राजा की आज्ञा के अनुसार समस्या पूर्ति, प्राकृतिक वर्णन

Ri

तुन्दिलतनुजातोऽसि ।

गोपा० - ननु कथं एवं जातः । जानात्येतत् ? भोः संसार दुःखप्रहता उदरे मे निविष्टाः ।

गोवि० - असत्यमेतत् । न किंचित्प्रविशति दुःखं तवोदरे ।

गोपा० - अरे पश्य भोजनादिकम् । नाहं प्रभूतमन्नं भक्षयामि । जानात्येवेदम् ।

गोवि० - केवलमेकं मोदकमाहारस्त्वम् । नूनं न ततोऽधिकं भक्ष्यते त्वया ।

गोपा - अधुना यदा यदाहं वदामि 'मदनिके पर्याप्तं मे भोजनं' तदा तदा सा ! नाथ, स्वादु मोदकानि । अधिकतरं भक्षणीयं, जानामि ते भोजनप्रियतां' इत्युक्त्वा पुनरपि मोदकादि प्रयच्छति ।

इसी तरह अन्य स्थलों पर ही भी हास्य रस से युक्त दृश्यों का समावेश किया है जो बहुत हृदयहारी हैं ।

entire pleasure with some pain brought. In the light of this ~~it~~ is interesting to note that we have a drama, the solitary example of the drama which marks a break from the accepted Tradition of to the dramaturgical works in Sanskrit enjoin upon the playwrites to produce comedie only. According to them a play must end in a happy note. The growth of tragedy in modern indian vernaculars in the contact of the western Ideas / where tragedy is recognized as a mode of play writings. In Sanskrit we had never had tragedies. of course ~~whe~~ we had some tragic scenes produced where we had descriptions of the dead bodies the cremation Scenes ect. still the express injuction of the dramatogist like Bharata that the plot should be so contrived as to bring in the happy result in the end. this sometimes resulted in certain plays. in which the story was given a peculiar twist to make it a comedy. the uttarrām Charitam and the Abhijān Shakuntala are ~~some~~ examples. the cases in point. According to modern standards of ~~...~~ criticizm it would have been far better if these plays would have ended in Sakm's exile and the internment of ~~Shakuntala~~ sīlā in the earth respectively these would have become tragedis and would have special appeal. For the present day critic. Believes ~~that~~ it is not always necessary that it is the comedy ~~the~~ only which gives happiness. Even the tragedy has more appeal even than the comedy for has not shailey said our sweetest songs are those that tell us saddest thought and our

इन मधुर गीतों के अतिरिक्त हास्यरस से युक्त दृश्य भी पाठक का बहुत अधिक अनुरंजन करते हैं।

~~श्री~~ कालिदास को यश की प्राप्ति होती है, गोपाल को भार्या प्राप्ति होती है किन्तु गोविन्द को क्या मिला. इस विषय में सरस वार्तालाप सुनिए —

गोविन्दः — रे गोपाल! कालिदासेन लब्धा कीर्तिः भवता चार्जिता प्रीतिः अस्माकं तु का गतिः?

— अरे गोपाल कालिदास को कीर्ति मिली, तुमने प्रीति प्राप्त की (अर्थात भद्रनिका नामक कन्या को अपनी भार्या बना कर उसका प्रेम प्राप्त किया) किन्तु हमारी क्या गति हुई।

गोपालः — मुक्तिः। (अर्थात तुम्हें मुक्ति मिल गई)

गोविन्दः — कथं जीवतो मे मुक्तिः। (मुक्ति तो जीते मर कर प्राप्त होती है जीते जी मेरी मुक्ति कैसी?

गोपालः — वयं बद्धा भवांस्तु मुक्तः एव।

गोविन्दः — कथं त्वं बद्धः।

गोपा० — निगड पाशेः

गोवि० — कया

गोपा० — भद्रनिकया।

गोवि० — तर्हि बन्ध एव मे प्रियः।

गोपा० — मैवम्। प्रियवयस्य, बुद्धोऽहं प्रबुद्धोऽहं विप्रबुद्धोऽहमधुना। अपि वृद्धे गते सेतुबन्ध इव मेऽयं ~~बन्धन~~ प्रबोधः। मा ते स्खलनं भवतु। मा स्त्रीपाशे बद्धो भूः।

गोविन्द — कथं स्त्री सुखं मावाप्य कथं मां वञ्चयसि।

गोपालः — नहि रे अप्रबुद्ध। दूरत एव नारी प्रिया। तस्या पाणिग्रहणेन स्वहस्तयोर्हि लोह शृंखला बध्यते। न केवलं हस्तयोः पादयोश्चापि।

गोवि — न जाने किं वदसि। विशदं ब्रूहि।

गोपा — पश्य माम्। कमपि भेदं पश्यसि?

नृत्य और संगीत में कुशल सरस्वती का एक छोटा सा गीत सुनिए- जिसमें मधुरिमा कूट कूट कर भरी हुई है-

महान् वीरता चारिता ।
रमणीमानस मोहिनी मता ॥ ध्रु० ॥
~~प्रेम याच~~ प्रेमयाचनैर्जिता न ललना
शूरपथे सा भाता ललिता ॥ १४॥. (खंबावती, त्रिताल:)
द्वि० अङ्क०, पृ० ३८,

सरस्वती द्वारा गाया हुआ एक अन्य सरस गीत सुनिए -

रम्या नलिनदल कोमला
तरला तटिनी शीतल निर्मल सलिला ।
स्नेहमयी मणिमाला ॥ ध्रु० ॥
इयमवतीर्णा वास्तुदेवता । सकलान दयानुयाता ॥
प्रसाद पूर्णा वचनातीता । मूर्तिमंती प्रभुलीला ॥६॥. च० अङ्क, पृ० ६६. (खमाज, त्रिताल:

७.
८. गौरवं पीडयान्वितम् । पीडा तु नश्यति गौरवं च चिरं तिष्ठति — पृ० ६६.
९. क्रियापदं सदा वाक्ये कर्तुरन्यं न वान्वियात — पृ० ७५.
१०, न रुचिरे किंचिच्चीराय विचरति — पृ० ७६.
क्षणिकः पराक्रमः । तत्काव्यगानं तु चिरंतनम् — पृ० ८८.

कहीं कहीं पर सम्पूर्ण श्लोक एक सुभाषित के रूप में प्रकट होता है —

रूपः कवेः किं चरणावलिभिः साधर्म्यमाप्यं किरणै रवेर्नु ।
स्पृशन्ति सूर्यस्य करा रजांसि समत्वभावात् , न समानधर्मात् ॥ पृ० ६६, श्लोक ३१, पं० अङ्क ।

कहावतों और सूक्तियों के अतिरिक्त लय और ताल से युक्त गीतों के सृजन करने में भी लेखक सिद्धहस्त हैं. संगीत रचना से नाटक के सौन्दर्य में महत्त्वपूर्ण वृद्धि हुई है।

प्रथम अङ्क में गोपाल मदनिका से अपनी भावी पत्नी के सौन्दर्य और गुणों के बारे में गा कर सुनाता है —

कामिनी हृदय मोहिनी मदनबोधिनी नयन संक्रान्ता । संहरति दर्शनं सकलमपान्यत कान्ता ॥
शाकि चित्त हारिणि शुक्ताक्षि कदाचित स्पृष्टा । विरहेण देह दहनं विरहे हि विसृष्टा ॥
आयाति सुवक्षः पुरोगति सिहलं प्रतिकर्षति चरणे नीविडनितम्ब स्थलं
नासिकाधरस्ये च निवारयत्यविनयं रक्ता कपोलोद्गता हनुस्थोद्गता कामिनो बीता ।
दर्शयेदभर मन्दिरं मधुपटैः सिक्ता ॥ ३६ ॥ प्रथमो अङ्कः

गीत, Laughter scenes.

के सिद्धान्त को अधिक मान्यता दी गई है। सम्पूर्ण नाटक में वास्तविक युद्ध का कोई भी दृश्य नहीं दिखाया गया।

'कालिदास चरितम्' नाटक से पहले नाटक 'संगीत सौभद्रम्' के विषय में लेखक की दो दृष्टिकोण से आलोचना की गई थी। प्रथम तो यह कि नाटक में प्राकृत भाषा के प्रयोग का अभाव और दूसरे संस्कृत में लिखे नाटक की आंग्ल भाषा में प्रस्तावना यही दो बातें प्रस्तुत नाटक में दृष्टिगोचर होती हैं किन्तु इन दोनों का निराकरण करते हुए लेखक कहता है कि आधुनिक समय में प्राकृत का प्रयोग नाटक की आधुनिकता पर एक बहुत बड़ी बाधा बन सकता था तब नाटक आधुनिक न रह कर प्राचीन नाटकों का अनुकरण मात्र रह जाता। दूसरी आलोचना के विषय में भी उनका यही कथन है कि आंग्ल भाषा में अधिक लोगों की गति होने से उसे ग्रहण करने में लोगों को अधिक सुविधा होगी इसलिए ऐसा प्रयोग किया गया है।

भाषा सरल और मुहावरों से युक्त है कहीं कहीं पर तो मुहावरे प्राचीनता का पुट लिए हुए हैं किन्तु कहीं कहीं पर रचना बिलकुल नवीन है। निम्नलिखित कुछ उदाहरण देखिए -

1. सुप्तो हि बोधनक्षमः। प्रबुद्धं तु को नाम बोधयिष्यति - पृ० ३.
2. न हि चतुःशालास्थिता संमार्जनी देवगृहे स्थापिता स्थापनीया - पृ० ३.
3. कण्टकास्तृतमेव राजसिंहासनम् - पृ० ६.
4. न युद्धं लोककल्याणकरम् - १४.
5. सेवाऽपि भाग्यसहिता ननु साऽत्र हि धन्या - १६.
6. न कदाङ्गना सहते सपत्नीम्. - १६.

वापीजलानां मणिमेखलानां शशाङ्कभासां प्रमदाजनानाम्।
चूतद्रुमाणां कुसुमान्वितानां ददाति सौभाग्यमयं वसन्तः ॥ प्र० अङ्क, श्लोक ७. (ऋतुसंहार, ६.३.)

जातं वंशे भुवनविदिते पुष्करावर्तकानां जानामि त्वां प्रकृतिपुरुषं कामरूपं मघोनः।
तेनार्थित्वं त्वयि विधिवशाद् दूरबन्धुर्गतोऽहं याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा ॥
द्वि० अङ्क०, श्लोक १७, (मेघदूत - १ - ६)

नद्या इव प्रवाहो विषमशिलासंकटस्खलित वेगः। विघ्नित समागमसुखो मनसिशयः शतगुणो भवति ॥
च० अङ्क, श्लोक ११, (विक्रमोर्वशीये ३-८)

वागर्थाविव संपृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये। जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ ॥ पं. अङ्क०, ३ श्लोक
(रघुवंश, १.१.)

लेखक ने सभी प्रचलित छन्दों का प्रयोग किया है, जिनमे इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, उपजाति, द्रुतविलम्बित, पृथ्वी, भुजङ्गप्रयात, मन्दाक्रान्ता, मालिनी, रथोद्धता, विद्युन्माला, वैतालीय, वसन्ततिलका, वंशस्थ, शालिनी, शार्दूल विक्रीडित, शिखरिणी, स्वागता और हरिणी ~~है~~ आदि मुख्य हैं।

प्राकृतिक छन्द द्विपदी, साकी आदि का भी विद्वान लेखक ने प्रयोग किया है। गीतों के गाने का ढंग भी परम्परागत ही है, कहीं कहीं पर नवीन लय और ताल का प्रयोग किया है।

नान्दी के पश्चात प्रत्येक अङ्क मे तीन तीन दृश्य हैं केवल पञ्चम अङ्क मे प्रवेशक ~~की~~ की आवश्यकता है। उस समय जिस प्रकार की राजनीति रही होगी उसकी कल्पना के आधार पर ही इस नाटक मे भी राजनीति का वर्णन है, किस प्रकार प्राचीन काल मे राजा एक दूसरे का रहस्य ज्ञात कर लेते थे और युद्ध करने से डरते नहीं थे किन्तु फिर भी यदि गम्भीरता से अवलोकन किया जाय तो नाटक मे अहिंसा

poetry was his passion but not his vocation. He has come down to our generation only as a poet because literature alone can remain immortal and other mundane matters are forgotten and lost. Kalidasa himself has not left much information about his personal details and hence we know him only as a great poet from his surviving compositions."

लेखक ने नाटक लिखते समय कालिदास की ~~नाटक की~~ कृतियों के क्रम का भी ध्यान रखा है। नाटक का आरम्भ 'ऋतु संहार' ~~से~~ नामक कृति की समाप्ति से होता है और नाटक का अन्त जब होता तब कालिदास अपने महाकाव्य रघुवंश की रचना आरम्भ करते हैं। कालिदास का विदर्भ दौत्य का समय उनकी मेघदूत रचना से सम्बन्धित है और मालविकाग्निमित्र भी उसी समय की कृति है।

कालिदास और नृप विक्रमादित्य के अतिरिक्त सभी पात्र काल्पनिक हैं। नाटक में आये हुए का पण्डितराज भी काल्पनिक है। पण्डितराज ~~द~~ जगन्नाथ से उनका कोई सम्बन्ध नहीं है। क्योंकि पण्डित जगन्नाथ का समय १७वीं शताब्दि माना जाता है। कालिदास स्वयं ~~पहले~~ विदर्भ देश में दूत के रूप में प्रेषित किये जाते हैं और वहीं से वे अपनी पत्नी अलका (प्रस्तुत नाटक में कालिदास की पत्नी अलका है) को मेघ ~~के~~ द्वारा सन्देश भेजते हैं। यही मानो मेघदूत कृति का स्रोत था।

नाटक कवि कालिदास से सम्बन्धित है इसलिए लेखक ने कालिदास की कृतियों से कतिपय श्लोक ज्यों के त्यों उद्धृत कर दिये हैं।

मत्तद्विरेफ परिचुम्बित चारुपुष्पा, मन्दानिलाकुलित नम्र मृदुप्रवालाः।
कुर्वन्ति कामिमनसां सहसोत्सुकत्वं बालातिमुक्त लतिकाः समवेक्ष्यमाणाः॥ प्रथमो अंक; ६ श्लोक
(ऋतु संहार ६.१७)

'कालिदास चरितम्' — श्री० भि० वेलणकर (१९६१)

पांच अंकों का और लगभग १०० पृष्ठों का नाटक 'कालिदास चरितम्' गीर्वाण सुधा-प्रकाशन के अन्तर्गत प्रकाशित हुआ है। श्री भि० 'वेलणकर' संगीत सौभद्रम् नामक एक मराठी नाटक का अनुवाद संस्कृत में प्रकाशित कर चुके हैं, किन्तु प्रस्तुत नाटक उनकी अपनी स्वतन्त्र रचना है। 'कालिदास चरितम्' नाम के आधार पर इसके ऐतिहासिक नाटक होने का संशय हो सकता है, इसका निवारण करते हुए स्वयं लेखक लिखते हैं।

'नेदमैतिहासिकं नाटकम्। महाकवि कालिदासस्य वाङ्मयपर्यालोडनेन तस्य जीवितविषये यन्मम मानसेन कल्पितं तन्नाट्यरूपेणात्र निबध्यते। यदिदं रसिकाभिमतं तन्मे श्रमः सफली भूता इति मन्ये" (प्रयोजनम्)

अर्थात - यह ऐतिहासिक नाटक नहीं है। महाकवि कालिदास के साहित्य का अवलोडन करने पर उसके जीवन के विषय में मैंने जो कल्पना की उसी को नाटक का रूप दे दिया है। यदि रसिक जनों को यह कृति ~~अच्छी~~ रुचिकर लगी तो मानो मेरा श्रम सफल हो गया।

नाटक के प्रारम्भ में लेखक ने आंग्ल भाषा में चार पृष्ठ का आमुख लिखा है जिसमें उन्होंने ~~कई महत्वपूर्ण विष~~ नाटक विषयक कई महत्वपूर्ण तथ्यों पर प्रकाश डाला है।

"कालिदास चरितम् is not a historical ~~play~~ piece but a character play. Very meagre information which can be called reliable is available about this greatest poet of India. I have accepted that Kalidasa lived at the court of चन्द्रगुप्त II (विक्रमादित्य) at Ujjain in the ~~th~~ 4th century A.D. I have also accepted that he was deputed as an envoy (राजदूत) to Vidarbha (but not to वाकाटकs) by the King of Malwa. I have, however, presumed that a person who is being entrusted with such an important political mission, cannot have been a poet only. According to my conception

(चीन देश के वासियों का भारत में आने का क्या प्रयोजन होता था इसकी ओर लेखक ने प्रकाश डाला है। भर्गाचार्य से उनके शिष्य पूछते हैं कि चीन लोग का भारत आने में का क्या प्रयोजन हो सकता है तब भर्गाचार्य बताते हैं —

विदेशीयानां विषये तु एवं प्रतिभाति। एते खलु केवलं स्वदेश-प्रेम्णा एव परदेशं प्राप्य तत्र संस्कृते गाढतरं अध्ययनं कुर्वन्ति। प्रसंगवशात् शिक्षा सौकर्यं चेत् अभिमत धर्मस्य दीक्षामपि गृह्णन्ति। सर्वत्र आहिंडय मानाः देशेऽस्मिन् कीदृशः आचारविचारः धर्मग्रन्था प्रजासु कियती धर्म श्रद्धा अनुशासननिष्ठा राजाप्रजयोः परस्परविश्वासः कीदृशः आदरः कियत् सैन्यबले लोकेषु धैर्यं शौर्यं वर्तते वा न वा मन्त्रिमण्डलस्य च सेनापतेः कीदृगैक मत्यं, ज्ञानविज्ञानयोः कीदृशी संपन्नता प्रगतिश्च इत्यादिकं किं बहुना सर्वमपि निपुणतरं समीचीनासमीचीनं निरीक्ष्य विविच्य च प्रकाशयन्ति। एतस्य दृष्ट्या अस्य महानुपयोगः इति ते मन्वते। पृ० ६ अनु० १६)

कहीं कहीं पर रूपक की अनुपम छटा है —

निशीदृगतेन तमसा ग्रस्येत प्राड्भुवं यदा।
तदा तद् ध्वंसनं कर्तुं कः शक्तो भानुना विना ॥ १७ ॥ दिलीपकौमु० पृ० १२.

और साथ ही कविवर ~~दिवाकर~~ मयूर द्वारा हर्ष की प्रतिभा का चित्र कितना भव्य है —

~~दिवाकरस्य~~ राजन् विभावसुरिवात्र करैः समग्रैः आदाय लोकजलधेर्दिनतोयमुच्चैः ।
तस्य ह्रियाति प्रकुरुते घनकोशमध्ये काले तु तद्वति लोकहितार्थमेव ॥ पृ०१२, श्लोक १४.

लेखक को अनुप्रास प्रिय अलंकार है इसका एक सुन्दर उदाहरण देखिए। इसमें केवल अनुप्रास ही नहीं सुन्दर वनिताओं के यौवन का चित्रण होने के कारण शृङ्गार रस का ~~भी कारकभूत~~ उद्दीपक भी है।

काश्चित्काञ्चनकाञ्ची-किंकिणिरवैः कुर्वन्ति कर्णोत्सवम् → (अनुप्रास)
कासां नूपुरसिंजितं कलरवं हंसादिकाऽऽकर्षकम् ।
कासां स्थूलनितम्बमन्दगमनं यन्नेत्रयोः कौतुकम्
काश्चित् क्वणित-वीक्षणैः सललितैः चित्तव्यथां कुर्वते ॥ पृ० १०, श्लोक ६.

'ल' का अनुप्रास भी दर्शनीय है —
प्रमदा मृदुवल्लरीः मृदुहस्तेन लुनन्ति लीलया ।
मृदुभिस्तु कटाक्षपातनैः युवचित्तं दलयन्त्यपि ध्रुवम् ॥ ६ श्लोक, पृ० ३.

इनकी ये दोनों कन्यायें थीं।

कलावती – शत्रुपक्ष के दुष्ट राजा चण्डदेव की पत्नी है – वह एक कामुक स्त्री है। इसने पति की कामुकता के प्रतिशोध स्वरूप वह भी किसी सुन्दर पुरुष से काम केलि करना चाहती है और किसी भी सुन्दर पुरुष को यदि वह चाहती है तो किसी न किसी प्रकार उसे पाने का प्रयत्न करती है। पुरुष वेश धारी प्रतिभा पर रीझ कर वह उसे अपनी चेटी चतुरा द्वारा अपने पास बुलाती है जब वह उदासीनता प्रकट करता है तो एक और कपट जाल बिखेरती है जिसमें फंस कर चण्डदेव प्रतिभा को सेनापति बना देता है। किन्तु रानी कलावती अपने कार्य में सफल नहीं हो पाती एक तो प्रतिभा के उसके प्रति उदासीन होने से (क्योंकि वह स्वयं स्त्री थी) और दूसरे चण्डदेव के ऊपर आ पड़ी युद्ध की आपत्ति के फल स्वरूप।

कलावती उन अनेक रानियों का प्रतिनिधित्व करती है जो कामुक राजाओं की रानी कहलाने का अधिकार तो रखती हैं लेकिन स्वयं किसी न किसी अन्य व्यक्ति में आसक्त हो कर समय यापन करती हैं। इसके लिए उनका चरित्र स्तर अत्यन्त गिर भी जाय तो इसकी उन्हें चिन्ता नहीं होती।

भाषा और शैली

विषय भाषा और कथानक के दृष्टिकोण से नाटक उत्तम ~~शैली~~ कोटि का है। लेखक की वर्णन शक्ति अद्भुत है। एक दृश्य का या व्यक्तित्व का वर्णन करते समय एक चित्र सा खिंच जाता है। नगर की रचना का कितना सुन्दर चित्रण है –

प्रोत्तुङ्ग मेह शिखराग्र समान हर्म्य काम्यं सुरैरपि च यत् रचना विशेषात्।
रम्यं विभाति वनिता वदनारविन्दैः साम्यं यदीयं नगरं सरसां विधत्ते ॥ पृ० १०, श्लोक ४.

उन्हें आरम्भ से लेकर युद्ध की शिक्षा दी जाती है जिससे वे अपना कार्य करने मे सफल होती है। दोनों ही कन्याये बहुत कुशाग्र बुद्धि है तभी तो उनके द्वारा किये गये कार्य को बड़े से बड़े गुप्तचर भी न पकड़ पाये और सबसे बड़ी बात यह है कि लड़की हो कर लड़के का वेश बनाना और फिर शत्रुओं के घर रह कर उन पर पूर्णतः अपना विश्वास जमा कर अपनी अभीष्ट सिद्धि करना यह घोषित करता है कि प्राचीन वर्ष के समय मे लड़कियों को कितनी ऊँची सर्वांगीण शिक्षा दी जाती थी, वे केवल गृहिणी के कार्य मे ही कुशल नही होती थी, वरन समय आने पर अश्व पर चढ़ना तलवार, चलाना और युद्ध करने मे भी वे पीछे नही रहती थी। इनके सभी कार्य रहस्य मय थे। ये शत्रुपक्ष के गुप्तचर तुषार को छुड़ा कर उसे शत्रुओं के पास पहुचान, शत्रुओं मे अपने पर विश्वास दिलाने का एक सबल कारण था और इसी के आधार पर वे लगातार सफल होती गई।

सूत्रधार प्रतिमा और चन्द्रिका का परिचय देते हुए स्वयं कहता है —

बाल्ये वयसि एव प्रतिमा स्वभातुलात अतिनिपुणतया युद्धशिक्षां गृहीतवती। तथैव चन्द्रिकाऽपि

प्र० अङ्क, पृ० २.

२४- और चामत्कारिक बात यह है कि दोनो कन्याये प्रथम अङ्क मे और अन्तिम पंचम अङ्क मे ही प्रकट होती है, किन्तु उनका कार्य लगातार चलता रहता है और वे सम्पूर्ण कार्य अदृश्य हो कर ही करती है। इनका रहस्योद्घाटन अन्त मे जा कर ही होता है कि वे सम्पूर्ण पहले जो कुछ भी हुआ रहस्य मय हुआ इनकी

राज्य कार्य में डूबते हुए भी और चतुर्दिक अपनी दिव्य दृष्टि का प्रसार करते हुए भी वे अपने दैनिक जीवन में आचार व्यवहार के विषय में बड़े सजग थे। मध्याह्न पूजा का समय होने पर वे सभी अन्य कार्य स्थगित कर देते हैं और स्नान के लिए चले जाते हैं —

भर्गाचार्यः - वत्सौ वरुणारुणौ। अयं मध्याह्न-सन्ध्या समयः इति विभाकरः करैर्मां निबोधयति। तस्मादहं अस्याः सरस्वत्याः तीरात् स्नानविधिं समाप्य यावदागच्छामि तावत् युवाभ्यां अस्य महतः शाल्मली-तरोरधस्तात् आसनमास्तीर्य कानिचित् फलानि आहर्तव्यानि। प्र० अङ्क०, पृ० ६.

अर्थात् - हे वत्स वरुण और अरुण, सूर्य अपनी किरणों द्वारा मुझे सूचित कर रहा है कि अब मध्याह्न सन्ध्या का समय हो गया है, इसलिए मैं सरस्वती के तट पर जब तक स्नान करके आता हूँ तबतक तुम दोनों इस बड़े शाल्मली वृक्ष के नीचे आसन फैला कर कुछ फल ले आओ।

~~इस प्रकार सिद्ध होता है कि प्राचीन राजाओं के गुरु कितना~~

इस प्रकार आध्यात्मिक जीवन को अक्षुण्ण रखते हुए और साथ ही साथ राज्य कार्य करते हुए प्राचीन ~~ऋषि और~~ राज्य गुरु अपना जीवन यापन करते थे।

प्रतिमा और चन्द्रिका ~~और~~ कलावती — नाटक की तीन ~~स~~ स्त्री पात्रियें भी अपनी अपनी विशेषता रखती हैं। प्रतिमा और चन्द्रिका क्रमशः राजपुत्री और सचिव पुत्री हैं। और अपने वर्ग और अधिकार के अनुसार ही प्रतिमा राजा द्रुम के प्रति आकर्षित होती है और चन्द्रिका द्रुम के मित्र चकोर के प्रति, किन्तु वे कामासक्त न होकर अपने कर्तव्य को पूरी तरह निभाती हैं। और जब पूर्णतया अपना कर्तव्य कर चुकती हैं तो अपने अभीष्ट को प्राप्त करती हैं।

अर्थात- तुम क्षत्रिय नहीं हो वरन तुच्छ छिपे हुए श्रृगाल हो। अपने मित्रों के और हित चाहने वालों के साथ महान विश्वास घात करने वाले हो। शीघ्र ही खड्ग के आघात से काटे गये ~~तुम्हारे~~ और लूक से सने हुए तुम्हारे अङ्गों को हिंस्र जन्तुओं को भोजन के लिए हाथ से फेंक फेंक कर दूंगा।

सम्पूर्ण उत्तर दिग्विजय कर चुकने के पश्चात् हर्ष अपने हृदय की ~~[illegible]~~ अपार विशालता का परिचय देते हैं वे नगर भर में घोषणा करवा देते हैं- ~~कि सम्पूर्ण~~

भोः भोः ! मे प्रिय पौराः ! श्रीमत्कृतसत्कारं स्वीकृत्य श्रीमत्प्रदत्तं यद्धनं तत्सर्वमपि लोक-कल्याणायैव स्थापितमिति सानन्दं समुद्घुष्यते । तथा च साम्राज्यान्तर्गतानां लोकानां हिताय प्रतिवर्षं पञ्चकोटिसंख्याकस्य धनराशेः व्ययो भवतीति घोषणाऽपि क्रियते । पृ० २४ पं, अङ्क०

हर्ष का मित्र चकोर भी आरम्भ से अन्त तक हर्ष का साथ देता है और प्रत्येक स्थिति में सहायता पहुंचाता है।

प्रतिभा और भर्गाचार्य —— जिस प्रकार चन्द्रगुप्त मौर्य ~~को~~ पर चाणक्य का वरद हस्त था उसी प्रकार हर्ष को भर्गाचार्य का संरक्षण प्राप्त था मुनि होते होने पर भी लोक कल्याण की भावना से वे सम्पूर्ण देश का भ्रमण करते थे और प्रत्येक बुरे कार्य को रोकने का प्रयत्न करते थे राज्य विरुद्ध सम्पूर्ण षडयन्त्रों की सूचना उन्हें अपने शिष्य मण्डल से मिलती रहती थी और वे सभी सूचनायें राजा हर्ष के पास भेज दिया करते थे यही कारण था कि शत्रुओं का कोई षडयन्त्र सफल नहीं हो सकता था। स्वं इस विषय में स्वयं भर्गाचार्य कहते हैं -

सर्वोत्कर्षं भजति भुवने यः सदा तं द्विषन्ति, ये नो लोके प्रबल नृपतेः सत्पदं गन्तुमीशाः ।
तैः स्वार्थान्धैः विपुलविभवैः, मत्सरग्रस्त चित्तैः मध्याक्रान्तं, कृतमिति परैर्नीयते राज्यमेतत् ॥

गुरुरेव दृढ़ा नौका यथा धराणि वासिवाः । सुखेनैवाभवन्त लोके राज्य सागरपारगाः ॥ १॥
। द्वि० अङ्क. पृ० ७

अर्थात - इन्द्र को भी गुरु की अपेक्षा होती है. ऐसी अवस्था मे मनुष्यों का क्या कहना । गुरु ही एक ऐसी दृढ़ नौका है जिस पर पृथ्वी के वासी राज्य रूपी सागर से सुखपूर्वक पार हो जाते हैं । केवल गुरु के आदर सत्कार करने मे तो हर्ष अद्वितीय है ही. सभा पण्डित और कवियों के प्रति उनकी सद्‌भावना भी अत्यन्त स्तुत्य है । उनकी सभा सदैव विद्वज्जनों से सुशोभित रहती थी —

परन्तु तत्रभवन्तः सभ्याः । सम्राजः हर्षदेवस्य इयं पण्डित रत्न मण्डिता सभा - बाणेन वीरमयी, मयूरेण चित्रमयी, मातङ्गेन श्रीमयी, दिवाकरेण तेजोमयीति भाति । — पृ० ११, द्वितीयोऽङ्कः ।

हे सभ्यो इधर जरा ध्यान दीजिए, सम्राट हर्ष देव की यह पण्डित रूपी रत्नो से मण्डित सभा. बाण कवि से वीर मयी है. मयूर कवि के कारण चित्रमयी है. मातङ्ग के कारण श्रीमयी है. दिवाकर के कारण तेजोमयी है ।

जहाँ हर्ष स्वयं भी अत्यन्त विद्वान, उदार हृदय और दानी थे किन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं कि उनमें वीर रस की उतनी उद्दामता नहीं थी. जब उन्हे क्रोध आता था तो शत्रु का बच निकलना असंभव होता ही था । शशाङ्क ने उनके बड़े भाई राज्यवर्धन का वध किया था जब हर्ष उसका प्रतिशोध लेने आते हैं तो इसका वध करके और उसका राज्य तहस नहस करके ही जाते है । उनके क्रोध के सामने ठहरने की किसे हिम्मत है ?

हर्षः (सक्रोधम्) रे रे नराधम । अस्मत्परमपूज्यस्य ज्येष्ठभ्रातुः राज्यवर्धनस्य उपांशु घातिन इदानीं क्व गच्छसि । रे क्षुद्रपशो । अद्य त्वमात्मानं व्याघ्राऽऽघ्रातं जानीहि ।

न त्वं क्षत्रिय वीर्यजोऽसि पिशुनः प्रच्छन्न शालावृकः ।
मित्राणां हितकांक्षिणामपि महान विश्वास घाती खलः ॥
हित्विभ्यः किल भोजनार्थमचिरात दास्यामि हस्तस्फुरत ।
खड्गाऽऽघात - विभीन्नवर्म । विगलद्रक्ताऽऽवृत- गात्राणि ते ॥ - ५. पृ० २१. च० अङ्कः

पत्नी रूप में ग्रहण करो और चकोर भी चन्द्रिका को पत्नी रूप में स्वीकार करे। इसके पश्चात भर्गाचा नागरिकों को सम्बोधित करके कहते हैं कि जिनके प्रताप से तुम दुष्ट चण्ड के शासन से मुक्त हुए हो वे यही महाराज हर्ष हैं। इसके पश्चात भरतवाक्य के उच्चारण के साथ ही इस नाटक की समाप्ति होती है।

'चरित्र चित्रण'

हर्ष —

'हर्ष दर्शनम्' का नायक ए हर्ष, एक ऐतिहासिक व्यक्तित्व है और प्रस्तुत लेखक ने नायक के चरित्र के साथ पूर्णतया न्याय किया है। 'हर्षदर्शनम्' का नायक अत्यधिक वीर कूटनीतिज्ञ तो है ही लेकिन साथ ही साथ अत्यन्त धार्मिक, ~~कूटनीतिज्ञ~~ दानी और गुरुजनों का आदर सत्कार भी करने वाला है। आश्रय चाहने वालों के लिए उसका द्वार सदैव खुला है तभी दोलड़ाके प्रतिमा और चन्द्रिका के ~~बारे में वह कहता है~~ आश्रय मांगने पर वह कहता है—

हर्षः- आश्रयाभावात् राजपरिग्रहस्य इच्छा ~~हि~~ चेत् तदनुरूपं भवेदेव। प्र० अङ्क०, पृ० २.

अर्थात - आश्रय के अभाव में यदि राज्य की सहायता की अपेक्षा हो तो ऐसा ही हो।

हर्ष के गुरु भर्गाचार्य उसे प्रत्येक कार्य में सहायता देते हैं तो हर्ष के लिए भी गुरु से बढ़ कर और कोई शक्ति नहीं है। इतने बड़े साम्राज्य में कहां क्या हो रहा है इस रहस्य का ज्ञान कुछ तो गुरु अपनी ~~ह~~ दिव्य दृष्टि से ही लगा लेते हैं और कुछ - अपने विस्तृत शिष्य मण्डल के द्वारा। ~~इसी~~ हर्ष के शत्रु चण्डदेव और शशांक द्वारा जो कपट जाल फैलाया गया था उसका रहस्योद्घाटन भर्गाचार्य ने ही किया था इसलिए गुरु के प्रति कृतज्ञता से भर कर हर्ष कहता है—

हर्ष - अहो देवेन्द्रस्यापि गुरोरपेक्षा। किं पुनर्मानवानाम्।

गुरुरेव ~~इन्द्र~~ दृढ़ा नौका यया धरणिवासिनः । सुखेनैवाभवन् लोके राज्यसागरपारगाः ॥ ११॥

द्वि० अङ्क. पृ० ७

अर्थात - इन्द्र को भी गुरु की अपेक्षा होती है, ऐसी अवस्था में मनुष्यों का क्या कहना । गुरु ही एक ऐसी दृढ़ नौका है जिस पर पृथ्वी के वासी राज्य रूपी सागर से सुखपूर्वक पार हो जाते हैं ।

~~केवल~~ गुरु के आदर सत्कार करने में तो हर्ष अद्वितीय हैं ही, सभा पण्डित और कवियों के प्रति उनकी सद्भावना भी अत्यन्त स्तुत्य है । उनकी सभा सदैव विद्वज्जनों से सुशोभित रहती थी —

परयन्तु तत्रभवन्तः सभ्याः । सम्राजः हर्षदेवस्य इयं पण्डित रत्नमण्डिता सभा - बाणेन वीरमयी, मयूरेण चित्रमयी, मातङ्गेन श्रीमयी, दिवाकरेण तेजोमयीति भाति । — पृ० ११, द्वितीयोऽङ्कः ।

हे सभ्यो ! जरा ध्यान दीजिए, सम्राट हर्षदेव की यह पण्डित रूपी रत्नों से मण्डित सभा बाण कवि से वीरमयी है, मयूर कवि के कारण चित्रमयी है, मातङ्ग के कारण श्रीमयी है, दिवाकर के कारण तेजोमयी है ।

~~जहाँ~~ हर्ष अत्यन्त विद्वान, उदार हृदय और दानी थे किन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं कि उनमें वीर रस की उतनी उद्दामता नहीं थी । जब उन्हें क्रोध आता था तो शत्रु का बच निकलना असंभव होता ह था । शशांक ने उनके बड़े भाई राज्यवर्धन का वध किया था जब हर्ष उसका प्रतिशोध लेने आते हैं तो उसका वध करके और उसका राज्य तहस नहस करके ही जाते हैं । उनके क्रोध के सामने ठहरने की किसे हिम्मत है ?

हर्षः (सक्रोधम्) रे रे नराधम । अस्मत्परमपूज्यस्य ज्येष्ठभ्रातुः राज्यवर्धनस्य उपांशुघातिन् इदानीं क्व गच्छसि । रे क्षुद्रपशो ! अद्य त्वमात्मानं व्यापादितं जानीहि ।

न त्वं क्षत्रियवीर्यजोऽसि पिशुनः प्रच्छन्नशालावृकः ।
मित्राणां हितकांक्षिणामपि महान् विश्वासघाती खलः ॥
हिंस्रेभ्यः किल भोजनार्थमचिरात् दास्यामि हस्तस्फुरत् ।
खड्गोऽद्यपात — कीमीन्द्रवर्ष्म । वेगलत्रुक्ता ऽऽवत - गात्राणि ते ॥ — ५. पृ० २१. च० अङ्कः

पत्नी रूप मे ग्रहण करो और चकोर भी चन्द्रिका को पत्नी रूप मे स्वीकार करे । इसके पश्चात भर्गाचार्य नागरिकों को सम्बोधित करके कहते है कि जिनके प्रताप से तुम दुष्ट चण्ड के शासन से मुक्त हुए हो वे वही महाराज हर्ष है । इसके पश्चात भरत वाक्य के उच्चारण के साथ ही इस नाटक की समाप्ति होती है ।

'चरित्र चित्रण'

हर्ष —

हर्ष दर्शनम् का नायक ए हर्ष, एक ऐतिहासिक व्यक्तित्व है और प्रस्तुत लेखक ने नायक के चरित्र के साथ पूर्णतया न्याय किया है। हर्ष दर्शनम् का नायक अत्याधिक वीर कूटनीतिज्ञ तो है ही लेकिन साथ ही साथ अत्यन्त धार्मिक, ~~कूटनीतिज्ञ~~ दानी और गुरुजनों का आदर सत्कार भी करने वाला है । आश्रय चाहने वालो के लिए उसका द्वार सदैव खुला है तभी दोलड़ाके प्रतिमा और चन्द्रिका के ~~बारे मे वह कहता है~~ आश्रय मांगने पर वह कहता है—

हर्षः- आश्रया भावात् राजपरिग्रहस्य इच्छा ~~है~~ चेत् तदनुरुपं भवेदेव । प्र० अङ्क०, पृ० ३.

अर्थात - आश्रय के अभाव मे यदि राज्य की सहायता की अपेक्षा हो तो ऐसा ही हो ।

हर्ष के गुरु भर्गाचार्य उसे प्रत्येक कार्य मे सहायता देते है तो हर्ष के लिए भी गुरु से बढ़ कर और कोई शक्ति नहीं है। इतने बड़े साम्राज्य मे कहां क्या हो रहा है इस रहस्य का ज्ञान कुछ तो गुरु अपनी ~~ह~~ दिव्य दृष्टि से ही लगा लेते है और कुछ - अपने विस्तृत शिष्य मण्डल के द्वारा । ~~इस~~ हर्ष के शत्रु चण्ड देव और शशांक द्वारा जो कपट जाल फैलाया गया था उसका रहस्योद्घाटन भर्गाचार्य ने ही किया था इसलिए गुरु के प्रति कृतज्ञता से भर कर हर्ष कहता है—

हर्ष - अहो देवेन्द्रस्यापि गुरोरपेक्षा । किं पुनर्मानवानाम् ।

पञ्चम अङ्क — चण्डदेव और उसका मित्र नन्दन परस्पर वार्तालाप करते है। नन्दन चण्डदेव को बताता है कि कंकायन और शालंकायन जो आपके और शशांक के परम मित्र थे वे शत्रुपक्षीय हो गये है। इस पर चण्डदेव बहुत दुःखी होता है। इतने मे महामन्त्री आकर सूचना देता है कि हर्ष की सेना ने सम्पूर्ण मगध राज्य को अपने अधीन कर लिया है और एक विश्वस्त व्यक्ति जो यहीं से आकर महाराज शशांक के आश्रय मे रह रहा था पहले तो उसने अपना विश्वास जमा लिया लेकिन बाद मे उसी ने ~~एक~~ शशांक को हर्ष के अधीन करवा दिया। ~~इस समाचार से चण्डदेव को बड़ा दुःख होता है।~~ और अब हर्ष की सेना आपके राज्य की सीमा पर आक्रमण कर रही है। इस समाचार से चण्डदेव को बहुत दुःख होता है और वह अपने नये नियुक्त सेनापति को अपनी से युद्ध के लिए भेजना चाहता है किन्तु वही पुरुष बताता है कि आज प्रातः काल से ही नये सेनापति का कुछ पता नहीं है। इस पर चण्डदेव स्वयं युद्ध के लिए उद्यत होता है।

इसी ओर से शिष्यों सहित भर्गाचार्य प्रवेश करके सभी नागरिकों को आश्वासन देते है कि अब कुशासन से तुम्हारी मुक्ति हो गई अब तुम महाराज हर्ष की प्रजा हो अब तुम्हें किसी प्रकार का दुःख नहीं होगा। इतने मे चण्ड को मारकर हर्ष आते हुए दिखाई देते है और उनके साथ ही शरीर को ढक कर आने वाला एक अन्य व्यक्ति आता है। भर्गाचार्य के पूछने पर आवृत शरीर वाली स्त्रीवाणी बोलती है कि वह पुरुष नहीं है। हर्ष और भर्गाचार्य इत्यादि सभी को इस बात पर बड़ा आश्चर्य होता है इतने मे कपड़ा उतार कर प्रतिमा सम्मुख खड़ी होकर कहती है कि मै वही लड़की हूँ जिसकी पहले पहल उपवन मे आपसे भेंट हुई थी। इसी ओर से नरेन्द्र भी अपनी प्रिया चन्द्रिका के साथ आता है। चन्द्रिका और प्रतिमा परस्पर गले मिलती है और स्वयं एक दूसरे द्वारा अभिनीत नाटक की प्रशंसा करती है। भर्गाचार्य हर्ष को बताते है कि चण्ड और शशांक द्वारा मारे गये शान्तिवर्मा की कन्या प्रतिमा है और उसके मन्त्री [illegible] की कन्या चन्द्रिका है। इन्होंने बचपन मे ही युद्धविद्या का अध्ययन किया था, अपने राज्य मे विप्लव हो जाने के कारण आश्रय लेने के लिए यह स्थाण्वीश्वर आई थी। अब तुम इस प्रतिमा नामक कन्या को

के लिए शोर मचाया तो संयोग से कीर्तिसेन उधर से निकल आया, उसे देखते ही सेनापति भाग खड़ा हुआ। इसतरह कीर्तिसेन के कारण वह बच गई चतुरा भी बनावटी रूप से कहती है कि यह रहस्य की बात तुम किसी से कहो। रानी उत्तर देती है कि ~~तुम~~ मुझे यह बात राजा से कहते हुए डर लगता है। राजा उद्यान में ~~प्र~~ प्रवेश करके सम्पूर्ण बात सुन चुकता है और प्रकट हो कर रानी से कहता है कि उसने इन दोनों का सम्पूर्ण वार्तालाप सुन लिया है वह शीघ्र ही सेनापति को जेल में डाल देगा और उसके स्थान पर कीर्तिसेन को सेनापति बनायेगा। रानी और चतुरा अपनी युक्ति की सफलता पर बहुत प्रसन्न होती है। किन्तु इतने में ही कञ्चुकी आकर ~~चण्डदेव को आ के मन्त्री के आने की सूचना देता है। मन्त्री आकर बताता है~~ चण्डदेव को एक पत्र देता है जिसे पढ़ कर घबराहट से चण्डदेव मन्त्री को बुलाने की आज्ञा देता है। ~~और~~, मन्त्री के आने पर उसे सेनापति को शशांक-राज्य सीमा पर भेजने की और उसके स्थान पर कीर्तिसेन को सेनापति नियुक्त करने की आज्ञा देता है। दूसरी ओर राजा हर्ष और उनका मित्र चकोर शशांक राज्य की सीमा पर अपना शिविर डाल कर आखेट मुद्रा में शशांक के नाश और वध की घोषणा करते हैं। हर्ष अत्यन्त क्रोध में आ कर कहता है कि जिस व्यक्ति ने मेरे भगिनीपति और भाई का वध किया है मैं उसका समूल नाश कर दूंगा। इतने में द्वारपाल ~~चकोर~~ को आ कर चकोर को एक पत्र देता है जिसका आशय यह होता है कि हे चकोर ~~यदि तुम चन्द्रिका प्राप्त करना चाहते हो तो शीघ्र ही पूर्व अचल पर्वत की~~ जिसमें एक रहस्य श्लोक लिखा ~~हु~~ होता है, यह श्लोक वास्तव में चन्द्रिका नामक लड़की का लिखा होता है जिससे हर्ष और चकोर ~~की~~ पहले पहल उद्यान में भेंट होती है। वे दोनों पत्र का रहस्य ~~[illegible]~~ जान वैसे ही कार्य करते हैं और युद्ध की तैयारी में लग जाते हैं।

पाखण्डी लोग ही आश्रय पाते हैं। योद्धा और वीर लोगों को वहां आश्रय नहीं मिलता है। ~~राजा चण्डदेव अपनी~~ एक अपना नाम कीर्तिसेन बताता है और दूसरे का नाम महासेन है। राजा चण्डदेव अपनी प्रशंसा सुन कर बड़ा प्रसन्न होता है और अश्व परीक्षा के उपरान्त उन्हें अपनी सेना में रख लेते हैं। कीर्तिसेन महाराज चण्डदेव के आश्रय में रहता है और महासेन राजा शशांक के आश्रय में। कुमार चण्डसेन को बताता है कि उनके द्वारा फैलाया हुआ सम्पूर्ण [illegible]जाल छिन्न-भिन्न हो गया है, क्योंकि ~~ह~~ हर्ष के गुरु भगाचार्य और उसके शिष्यों ने सम्पूर्ण रहस्य खोल दिया है। तथा हमारे द्वारा निष्कासित सामन्तों ने भी सम्पूर्ण रहस्य भेद कर दिया है। चण्डदेव पूछता है कि स्थाण्वीश्वर के बाह्य भाग से लेकर हर्ष के प्रसाद तक जो सुरंग निर्माण का कार्य यशस्वी कालिय आदि को समर्पण किया था उसका क्या परिणाम निकला इस पर कुमार कहता है कि वे कालिय आदि तो शत्रुपक्ष के थे आपके पास भेद लेने के लिए आये थे। आज जब मैं सुरंग का वृतान्त जानने के लिए गया तो उन्होंने मुझे पकड़ लिया तब इन्हीं दो वीरों ने मुझे छुड़ा कर मेरी जान बचाई है और मुझे यहां तक लाये हैं। यह बात सुन कर चण्डसेन का कीर्तिसेन और महासेन नामक दोनों सुन्दर योद्धाओं पर अधिक विश्वास बढ़ जाता है।

चतुर्थ अङ्क में - अश्वविद्या में युवक तरुण कीर्तिसेन को देख कर महाराज चण्डसेन की रानी कलावती उस पर रीझ जाती है और अपनी दासी चतुरा से कीर्तिसेन को अपने पास बुला लेने की युक्ति सोचती है। चतुरा कीर्तिसेन को बुलाने भी जाती है किन्तु कीर्तिसेन बहुत उदासीनता से उत्तर देता है कि उसे महारानी से मिलने की कोई इच्छा नहीं है। उसे तो अपना कार्य ठीक तरह से करना है। इस पर चतुरा एक दूसरी युक्ति सोचती है। जिस समय राजा चण्डदेव उद्यान में अपनी रानी कलावती से मिलने जाता है उस समय रानी कलावती राजा को देख कर भी न देखने जैसे अभिनय करके अपनी सखी चतुरा को झूठ मूठ ही एक घटना सुनाती है कि उस दिन मैं वाटिका में अकेली भ्रमण कर रही थी उधर से सेनापति ने आकर मुझ पर कुदृष्टि डाली मैंने सहायता

~~पौन-ना आने - [illegible]~~
~~तीन आने - [illegible]~~
~~तीन आने - [illegible]~~
~~दो आने - [illegible]~~

का उत्तर बड़ी चतुरता पूर्वक देता है। इसके पश्चात सभी लोग उत्सव देखने मे और नगर की सजावट देखने मे प्रवृत्त हो जाते हैं। उधर से महाराज हर्ष की सवारी निकलती है स्तुतिपाठक और बड़े बड़े कवि महाराज हर्ष की भूरी भूरी प्रशंसा करते हैं। सब से अन्त मे गुरु धर्माचार्य उनकी प्रशंसा करते हैं, और उन्हे सर्वविजयी होने का आशीर्वाद देते हैं। हर्ष उल्लास पूर्वक घोषणा करते हैं प्रथम पद कि वे उत्तर-दिग्विजय के समय दुष्ट चण्डदेव का दमन करेंगे और इसी स्थाण्वीश्वर के स्थान पर अब राजधानी कान्यकुब्ज मे नगरी होगी।

तृतीय अङ्क मे - चण्डदेव के भवन मे चण्डदेव और मगध का राजा शशांक परस्पर विचार करते हैं। वे सोचते हैं कि हर्ष को कैसे वध किया जाय। शशांक चण्डदेव को बताता है कि मेरे मित्र मालव के अधिपति ने हर्षराजवर्धन के भगिनीपति ग्रहवर्मा को मार डाला था, इस पर क्रोधित होकर हर्षवर्धन ने मालवाधिप का वध कर दिया। मालवाधिप मेरा मित्र था इसलिए मैंने मित्रघाती राज्यवर्धन का शीघ्र ही वध कर दिया। इस पर राजा हर्ष अपने भाई का ~~बदला लेने के~~ और भगिनीपति के वध का प्रतिशोध लेने के लिए उत्तर दिग्विजय करेगा। अब हर्ष का वध करने के लिए चण्डदेव की सहायता की आवश्यकता है। वे हर्ष द्वारा फैलाये गये गुप्तचर जाल के प्रति भी चिन्ता प्रकट करते हैं। चण्डदेव और शशांक द्वारा निकाले गये कितने ही सामन्त और योद्धा हर्ष की सेना मे जा मिले हैं जिससे चण्डदेव और शशांक का प्रत्येक रहस्य हर्ष को मालूम हो गया है। इतने मे चण्डदेव का मन्त्री उग्रसेन तीन व्यक्तियों को साथ लेकर आता है। ~~[illegible]~~ जिनमे एक तो गुप्तचर कुमार है और दो अन्य व्यक्ति है। कुमार चण्डसेन को बताता है कि इन दोनो ने मेरे प्राण बचाये हैं। चण्डसेन के परिचय पूछने पर वे बताते हैं कि वे अश्व विद्या, धनुर्वेद मे प्रवीण हैं और दक्षिण देश के निवासी हैं किन्तु वहाँ दुर्भिक्ष पड़ जाने के कारण आश्रय लेने के लिए राजा चण्डदेव के पास आये हैं क्योंकि राजा हर्ष के पास तो धार्मिक

है। भर्गाचार्य जी अपने शिष्यों से कहते है कि चाहे वैराग्य ग्रहण किया होने के कारण उन्हे संसार से अलग रहना चाहिए किन्तु फिर भी लोक कल्याण की भावना से संसार का मे कहां क्या हो रहा है इसका ध्यान रखना ही पड़ता है इसलिए हर्ष को बचाने के लिए उसके शत्रु पक्ष ने एक षड्यन्त्र किया है यह सूचना उसे देनी है। वे चकोर से पूछते है कि उत्सव मे आसनो की व्यवस्था ठीक तरह से कर दी है इस पर चकोर उन्हे आश्वासन देता है कि सम्पूर्ण कार्य ठीक तरह से किया गया है। भर्गाचार्य बताते है कि उत्तर प्रदेश का भ्रमण करते समय मैंने अ विश्वस्त सूत्रो से पता लगाया है कि हर्ष के उत्तर दिग्विजय की सूचना पाने पर जलन के मारे मगध का राजा शशांक चण्डदेव को प्रोत्साहित कर रहा है। वे दोनो ही हर्ष के वध के लिए गुप्त योजना बना रहे है। योजना की सफलता के लिए उन लोगों ने हर्ष के राज्य मे एक मण्डल की स्थापना भी की है। यह सम्पूर्ण सूचना देने के लिए ही भर्गाचार्य वहां से शीघ्रातिशीघ्र चल कर आये है। चकोर सम्पूर्ण सूचना पाकर चला जाता है। इसके पश्चात भर्गाचार्य अपने शिष्य वरुण और अरुण से कहते है कि वे मध्याह्न सन्ध्या के लिए जा रहे है। उनके शिष्य उनसे नालन्दा मे अध्ययन करने के लिए आये हुए चीनी विद्यार्थी ह्वेन सांग के विषय मे कुछ प्रश्न पूछते है। भर्गाचार्य ~~उन्हे~~ उन्हे बताते है कि विदेशी छात्र हमारी संस्कृति का अध्ययन करने के लिए आते है, इस कार्य के लिए उनके देश वाले उन्हे धन और आदर से सम्मानित करते है।

द्वितीय अङ्क मे - हर्ष के गुप्त ह प्रसाद मन्दिर मे हर्ष-चकोर गुप्तचर शात निशात और गुरु भर्गाचार्य सभी मिल कर मन्त्रणा करते है। हर्ष को इस बात की बड़ी प्रसन्नता है कि उसके गुरु भर्गाचार्य ने ऐसे शत्रुओं के ऐसे गुप्त रहस्य का पता लगा लिया है जिसका उसके बड़े से बड़े गुप्तचर भी पता नहीं लगा सके। इतने मे एक रक्षक हर्ष को सूचना देता है कि हमारे द्वारा पकड़ा गया शत्रुपक्ष का एक व्यक्ति जहां पर बन्दी बना कर रखा गया था उसे शत्रुपक्ष के दो युवक बलपूर्वक ~~पकड़ कर ले गये है~~। हमारे रक्षकों को हटा कर उसे छुड़ा कर ले गये है। इस घटना से सभी को आश्चर्य होता है। गुप्तचर प्रमुख शात निशात इस घटना के सम्बन्ध मे जांच करने की प्रतिज्ञा करते है। इसके पश्चात भर्गाचार्य पारिजात प्रासाद मे हर्ष के साथ चले जाते है और अरुण वरुण (भर्गाचार्य के शिष्य) उत्सव मे आये हुए चीन देशीय छात्र से वा वाग्विलास करते है किन्तु चतुर चीनी देशीय उनके प्रत्येक प्रश्न

I love you - these three words have a magic affect
Readers' Digest

'Laughter - A best medicine'

इतने मे ही नेपथ्य से सूचना मिलती है कि महाराज उत्तर दिग्विजय के लिए प्रस्थान करेंगे उसके लिए उत्सव का दिवस कल है अतः कल ही शाम को सभी लोग सपरिवार आ कर राजा का अभिनन्दन करें। सूत्रधार स्वयं भी इस शुभ अवसर पर अपना प्रयोग कौशल दिखाने के लिए प्रस्तुत होता है किन्तु इतने मे दूसरी ओर से उसे दो सखियों का वार्तालाप सुनाई देता है। पहले तो उसे स्वर अपरिचित सा लगता है किन्तु बाद मे स्मरण करके कहता है कि अब मुझे मालूम हो गया है। उद्यान मे राजा शान्ति वर्मन की कन्या प्रतिमा है तथा उसके सचिव की कन्या चन्द्रिका है। राजा शान्ति वर्मा का सम्पूर्ण राज्य चण्डदेव ने अपहरण कर लिया है इसलिए शान्ति वर्मा की कन्या प्रतिमा अपने बाल्यकाल से ही मामा के पास ही रही है और वहीं युद्ध विद्या की शिक्षा ग्रहण की है। अब आश्रय के अभाव मे कुटुम्ब सहित राजा हर्ष के आश्रय मे आ गये हैं। प्रतिमा का मातुल ~~श्रु~~ परम पूज्य भर्गाचार्य का शिष्य है। इतना कहकर सूत्रधार ले चला जाता है। उद्यान मे प्रतिमा और चन्द्रिका परस्पर वार्तालाप करती हैं। ~~वे~~ उन्होंने राजकीय उद्यान मे बिना आज्ञा के प्रवेश किया है इसलिए वे भयभीत भी हैं। उद्यानरक्षक आकर उन्हें सूचना देता है कि ~~वे~~ बिना आज्ञा के वे उद्यान के भीतर क्यों आ गई हैं, अब उन्हें रास्ता छोड़ कर दूर खड़े होना चाहिए क्योंकि अभी राजोद्यान मे महाराज हर्ष पधार रहे हैं। उसके इतना कहते कहते ही महाराज हर्ष अपने मित्र चकोर के साथ उद्यान मे प्रवेश करते हैं दोनो सखियाँ उन्हें दिखाई पड जाती हैं। ~~प्र~~ प्रतिमा राजा हर्ष की ओर मुड़ी चन्द्रिका चकोर की ओर आकर्षित होती है। प्रतिमा और चन्द्रिका दोनो ही प्रार्थना करती है कि उन्हें आश्रय चाहिए इस पर हर्ष कहते हैं कि यदि राजा के आश्रय मे रहने की इच्छा है तो इच्छा पूर्ण होगी। इसके पश्चात् सभी लोग चले जाते हैं। ~~भग~~ भर्गाचार्य जी अपनी शिष्य मण्डली के साथ प्रवेश करते

हर्षदर्शनम् – पं. डेग्वेकर पाण्डुरङ्गशास्त्रि विरचितं

१९६६ की शारदा पत्रिका में प्रकाशित (वासन्तिक विशेषाङ्कः)

आधुनिक काल में संस्कृत भाषा में लिखे गये नाटकों की कितनी अल्प संख्या है इस ओर दृष्टिपात कराते हुए डेग्वेकर महाशय लिखते हैं —

सूत्रधार – भोः! चिरकालं राजाश्रयाभावात् वाङ्मयकारणेन वा संस्कृत भाषाभाधिकृत्य नवनाटक-निर्मितिः अत्यल्प प्रमाणा। किं बहुना उदुंबर – कुसुमप्रायैव। क्वचित् दिष्ट्या दृष्टिपथं आयाति। एतादृशी दशा वर्तते। अस्यामपि दशायां संस्कृत-भाषया विरचितस्य 'हर्षदर्शनाख्यस्य' नव नाटकस्य प्रयोगो वर्तत इति घोषणां श्रुत्वैव किमिद नवनाटकमिति दर्शन कुतूहलिनी विद्वत्प्रचुर परिषदेषा सोत्कण्ठं तिष्ठति। पृ० १.

जिस वस्तु का प्रचार बहुत कम हो जाता है और वह कुछ ही दृष्टिगोचर होती है, उसे देखने का कौतूहल लोगों में ~~असर~~ ~~है~~ बहुधा हो जाता है, आधुनिक समय में यही हाल अब संस्कृत नाटक की हो रही है। ~~क्ष~~ बहुत ही कम संख्या में लिखे जाने के कारण और उसमें भी कम अभिनय के योग्य होने के कारण यदि कहीं भी संस्कृत नाटकों का अभिनय प्रदर्शित किया जाता है वहां दर्शक केवल इसलिए जाते इस कौतूहल को लिए जाते हैं कि संस्कृत नाटक के कैसा और किस प्रकार अभिनय किया जाता है। इसे पूरा समझ कर उसकी प्रशंसा करना तो बहुत ही कम लोगों के भाग्य में होता है। ऐसी भावना की ओर ही लेखक दृष्टिपात कराना ही लेखक का उद्देश्य है।

नाटक का कथानक

कथानक

महाराज हर्षवर्धन की दक्षिणापथ ~~कोदि~~ दिग्विजय से सम्बन्धित है। सूत्रधार लेखक का परिचय देता है निम्नलिखित शब्दों में देता है —

तस्मादस्मिन् सारस्वतानुकूलकाले विद्वज्जनानुरोधात् पुण्यपत्तनवासिना, कुलपरम्परागत साहित्यादि विषयस्य विद्याप्रवीणेन, डेग्वेकरोपनामकेन पांडुरंगाख्येन कविना कुरुक्षेत्र नामकं महाकाव्यं रचयित्वा सर्गबन्धात्मककाव्य रचना कार्यं किंचित कालं विहाय, इदं हर्षदर्शनाख्यं नवनाटकं व्यरचि – पृ० २

काश्मीर मानो सम्पूर्ण भारत वर्ष का उद्यान है, इसको छोड़ कर भला भारत वासी सुखी कैसे रह सकते हैं। तभी ग्राहम महाशय कह उठते हैं —

प्रणयोचित सामग्री समुत्पादन तत्परम्। उद्यानमिदमुत्सृज्य कथं लोकः सुखी भवेत।। पृ० २०.

राजनीतिक नाटक की भाषा ~~उसके~~ विषय के अनुरूप बनाने के लिए लेखक ने कहीं कहीं पर ऐसे शब्दों का प्रयोग किया है जो अपनी ध्वनि द्वारा ही क्रोध, शोक या ~~उत्साह~~ प्रसन्नता प्रकट करते हैं।

मुखर्जी की क्रोध की मुद्रा से आविष्ट मुखर उसके शब्दबाण हैं —

आः किमिदम्? जीवति मुखर्जों को वा काश्मीरान् न्यथयितुं प्रभवति? लियाखतालीखानस्य स्वप्नप्रासादं समूलघातं घातयेऽस्माभिः। भवतु। पाकिस्थान सैनिकैः पर्वतजनैश्चाहत्य मानं कश्मीर देशं रक्षितुं भारतदेशेन सैन्य साहाय्य माचरितम्। पृ० ३.

नेहरु जी की भाषा आधिक सौष्ठव पूर्ण है। ग्रैहम महाशय के साथ वार्तालाप करते समय नेहरु जी के शब्द सुनिए —

आर्य! परस्पर सङ्घर्षेण देशस्य हानि सम्भविष्यतीत्यालोच्यैवमाचरितम्। विश्वबान्धवत्वमत्यावश्यकम्। विश्व शान्तिरक्षणार्थमेव हि युक्तराष्ट्र संस्थापि जनिमलभत। महात्मगांधीपथमनुसरतामस्माकमस्त्रपातरणकार्ये न युज्यते। पृ० १२.

उपमा के प्रति भी लेखक का लगाव निम्नलिखित श्लोकों से प्रकट होता है -

शरदिन्दुपरिष्वक्तयामिनीव तमो विना। भाति स्वातन्त्र्यसम्पृक्ता विद्वत्परिषदत्यसौ ॥ पृ० २.

एक अन्य उपमा भी अत्यन्त सुन्दर है -

काश्मीरदेशं समुपागतशत्रुसैन्यं, प्रातस्तुषारमिव चण्डकरः स्वधाम्ना।
सञ्चूर्णयामि समरेऽतिभयङ्करेऽपि को मे रणे पटुभटस्समबाहुरास्ते ॥ पृ० ६,

लेखक का प्रकृति चित्रण का ढंग भी निराला ही है। काश्मीर का सौन्दर्य वर्णन करते समय चित्र खींच देने जैसी शैली का अवलम्बन किया है। एक विदेशी व्यक्ति भी काश्मीर के सौन्दर्य को देख कर मुग्ध हो जाता है। साहब महाशय जब काश्मीर के मध्य दृश्य देखते हैं तो उनके मुंह से अनायास ये शब्द निकल पड़ते हैं -

1. प्रकृतिरतिविदग्धा ताण्डवं रङ्गभूमौ विलसितनिजरूपा ह्यत्र नृत्यं तनोति।
विविधतरुसकाशात् कोकिलानां रुतं तत प्रतिदिशमपि रम्यं श्रूयते साधुगीतम् ॥ श्लोक० १७ पृ० २०. पं. ३२४
2. काश्मीरलब्धतनुभां वरवर्णिनीनामङ्गानि सङ्कृतमनोभववैभवानि।
3 ध्यान भूमिपरिवेषणरतं चित्तं प्राणेश्वरेण परिभुक्तसुखानि मन्ये ॥ पृ० २०, श्लोक १६.

प्रशंसा से कुछ नहीं बनेगा हमे वास्तविक बात की ओर आना चाहिए। नेहरू जी पूछते हैं कि क्या काश्मीर निवासी निर्भय और सुखी हैं, शेख अब्दुल्ला बताते हैं कि भारत जैसे गौरवशाली देश के संरक्षण मे रहते हुए काश्मीर निवासियों को किस बात की चिन्ता है। किन्तु साथ ही वे यह भी बताते हैं कि उन्होंने भाषण के अवसर पर कहा था कि काश्मीर देश निवासी पाकिस्तान के अधीन कभी भी नहीं होंगे उनका स्वतन्त्र मत होगा, किन्तु ऐसे कई भारत निवासी भी रुष्ट हो गये हैं वे सोचते हैं कि काश्मीर देश स्वतन्त्र रहना चाहता है मैं वही सन्देह युक्त भावना समाप्त करने ~~चाहता~~ के लिए आया हूं कि काश्मीर में इतनी शक्ति नहीं है कि वह अकेला रह सके वह विशाल भारत का अङ्ग बन रहेगा। किन्तु उसकी ध्वजा स्वतन्त्र रहेगी। नेहरू जी इस प्रस्ताव को प्रसन्नता पूर्वक मान लेते हैं। शेख अब्दुल्ला कहते हैं कि महाराज करण सिंह ही राज्यपालक बनेंगे इसके पश्चात सर्व मंगलकारी भरत वाक्य के पश्चात रूपक की समाप्ति हो जाती है।

शैली और भाषा

श्री भीमभट्ट की लेखनी से दो राजनैतिक नाटकों की रचना हुई है जिनमें पहला काश्मीर सन्धान समुद्यमः है और दूसरा हैदराबाद विजयः। काश्मीर सन्धान समुद्यमः में तो सभी पात्र राजनैतिक नेता ही हैं। इसमें स्त्रीपात्र का सर्वथा अभाव है, किन्तु हैदराबाद विजयः में एक स्त्रीपात्र का समावेश किया गया है किन्तु वह भी बहुत थोड़ी देर के लिए ही।

जैसा कि हैदराबाद विजयः नाटक के बारे में लिखते हुए कहा गया है लेखक की मुहावरों और लोकोक्तियों के प्रयोग में सिद्ध हस्त है।

1. महाकविनोत्कण्ठिता ज्वलति चालितेन्धनोऽग्निर्विप्रकृतः पन्नगः फणाङ्कुरुते' इति — पृ० ५.
2. आचरितमपि सैन्य साहाय्यं क्षीरमिव सर्पस्य विषरूपतामप्रापर भवतः — पृ० २७.
3. तर्पि तथापि शठे शाठ्यमिति नीतिर्न पठिता व भवता — पृ० २९.
4. मार्जारस्य तु लीलायां मूषका विगतासवः। २६. पृ०.

हानि की ही आशंका है। शेखब्दुल्लः के यह पूछने पर कि उन्होंने काश्मीर में क्या क्या देखा तो ग्राहम बड़े प्रसन्न हो कर कहते हैं कि सभी दर्शनीय वस्तुएं देख लीं, सबसे अधिक सन्तोष तो उन्हें इस बात का हुआ कि उन्हें काश्मीर के प्रधान शेखब्दुल्लः के दर्शन हो गये। इसके पश्चात काश्मीर के विषय में बहुत वार्तालाप होता है जिसका निष्कर्ष यही निकलता है कि काश्मीर के निवासी पाकिस्तान के अन्तर्गत किसी भी प्रकार नहीं आना चाहते।

सप्तम दृश्य — मुखर्जी महाशय को इस बात की बड़ी चिन्ता है कि काश्मीर समस्या के समाधान हुए बिना भारत में एक और समस्या उठ खड़ी हुई है और वह है हिन्दू कोड बिल का पास होना. हिन्दू कोड बिल के पास हो जाने से भारत में सनातन धर्म को बड़ी ठेस लगेगी इससे अभी तक चली आती हुई हिन्दू मान्यताओं की जड़ खोखली हो जाने का भय है। यदि शेखब्दुल्लः काश्मीर को स्वतन्त्र करवाना चाहता है जो मुखर्जी के जीते जी यह सम्भव नहीं। वे जवाहरलाल नेहरू को भी इस बात के लिए दोषी ठहराते हैं कि वे इतना व्यवहारकुशल होने पर भी काश्मीर के विषय में लियाकत अली खां की और शेखब्दुल्लः की नीति नहीं समझ सकते। आज के युग में तो धोखेबाज व साथ-धोखा करने वाले ही सफल होते हैं।

अष्टम दृश्य —

नेहरू जी स्वतन्त्र भारत के पञ्चवर्षीय चुनाव के बाद, कांग्रेस के आधिपत्य में ही देश को संभालते हैं। किन्तु काश्मीर के विषय में कोई निर्णय तब तक नहीं हुआ, इस बात की उन्हें अत्यन्त चिन्ता है। इतने में ही द्वारपाल आकर सूचना देता है कि काश्मीर के प्रधान शेख अब्दुल्ला आपसे मिलने के लिए आये हैं। काश्मीर प्रधान [illegible] नेहरू जी की बड़ी प्रशंसा करते हैं उधर नेहरू जी भी शेख अब्दुल्ला की भूरि भूरि प्रशंसा करते हैं। लेकिन अन्त में उन्हें कहना पड़ता है कि वास्तव

हमें काश्मीर को हस्तगत कर लेना चाहिए। इसपर नेहरू जी और मुखर्जी का मतभेद हो जाता है क्योंकि नेहरू जी अहिंसा ~~का~~ पथ का अनुसरण करना चाहते हैं और मुखर्जी युद्ध के पक्षपाती **हैं**। नेहरू जी ~~कहते हैं~~ कि संयुक्त राष्ट्र के शान्ति प्रतिनिधि ग्रहाम के निश्चय के अनुसार कार्य करना चाहते हैं किन्तु मुखर्जी महाशय कहते हैं कि गृहयुद्ध में बाहर के व्यक्ति को फैसला देने का क्या अधिकार है। दूसरे दिन के लिए सभा स्थगित कर दी जाय ऐसा निश्चय करके सभा विसर्जित की जाती है।

चतुर्थ दृश्य में — प्रधान मन्त्री नेहरू को इस बात का बड़ा दुःख है कि पाकिस्थान अपना व्यवहार क्षण क्षण में बदलता है और उसका भारत सेना के प्रति व्यवहार अत्यन्त अनुचित है। वे लोग जिस किसी भी उपाय से काश्मीर को प्राप्त करना चाहते हैं। ~~सु~~ संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा मण्डल का निर्णय भी नहीं होता। नेहरू इसी विषय पर चिन्तन करते हैं इतने में द्वारपाल ग्रहाम के आने की सूचना देता है। नेहरू ग्रहाम को आदर पूर्वक भीतर ले आने की आज्ञा देते हैं। ग्रहाम और नेहरू काश्मीर के विषय में वार्तालाप करते हैं। लियाकत अली खां ने तो ग्रहाम के सम्मुख एक ऐसा ही चित्र रखा था जिससे यह मालूम होता था कि हिन्दुस्थान ही अनुचित मार्ग का अवलम्बन कर रहा है किन्तु नेहरू जी के साथ वार्तालाप करने पर मालूम होता है कि भारत वर्ष की नीति पूर्णतया उचित है, पाकिस्थान वाले ही अनुचित मार्ग का अवलम्बन कर रहे हैं। सम्पूर्ण स्थिति को पूर्णतया समझ कर और जवाहर लाल नेहरू के उदात्त गुणों की प्रशंसा करते हुए ग्रहाम उनसे विदा लेते हैं। चतुर्थ दृश्य की समाप्ति यहीं पर हो जाती है।

पञ्चम दृश्य में — काश्मीर के विषय में सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त करने के लिए ग्रहाम महोदय काश्मीर प्रस्थान करते हैं. काश्मीर का सौन्दर्य देखकर वे बहुत प्रभावित होते हैं. इस दृश्य में काश्मीर के सौन्दर्य का ही अधिकतर वर्णन है।

षष्ठ दृश्य में — शेखअब्दुल्ला: और ग्रहाम का परस्पर साक्षात्कार होता है. वार्तालाप करने से ग्रहाम महाशय को मालूम होता है कि शेखअब्दुल्ला भी भारतीय नीति से तथा उन्हें जो सहायता भारत से मिली है. उससे बहुत संतुष्ट हैं। शेख साहब स्पष्ट रूप से बता देते हैं कि पाकिस्थान से सदैव उन्हें

समझें कि काश्मीर के विषय में मुसलमानों की नीति उचित है, भारतीय ही अन्याय पूर्वक आक्रमण कर रहे हैं। किन्तु सम्पूर्ण वार्तालाप कर चुकने के पश्चात भी ग्राहम अपना निश्चयात्मक उत्तर नहीं देते वे केवल यही कहते हैं कि जब तक भारतीय प्रतिनीधियों का या स्वयं काश्मीर के प्रधान शेख अब्दुल्ला और काश्मीर की जनता से सम्पूर्ण सूचना उपलब्ध न कर लें तब तक वे कुछ नहीं कह सकते। लियाकत अली के मन में प्रसन्न होता है कि उसकी कुटिल नीति सफल हो जायगी और काश्मीर का विभाजन करने में वह सफल हो जायगा।

तृतीय दृश्य — भारत की केन्द्र शासन सभा में चक्रवर्ति राजगोपालाचार्य पण्डित जवाहरलाल नेहरु, श्याम प्रसाद मुखर्जि, तथा एन बी खरे इत्यादि सम्मानित व्यक्ति काश्मीर के विषय में वार्तालाप करते हैं। नेहरु जी ~~का~~ मत है ~~कि हमें अहिंसा पथ अपनाना चाहिए~~ सभा को काश्मीर की परिस्थिति से अवगत कराते हुए कहते हैं कि स्वतन्त्रता उपलब्धि के कुछ दिन पश्चात पर्वतीय जनों ने उपद्रव कर दिया इसके पांच छः महीने के बाद पाकिस्थान की सेनाने काश्मीर को नष्ट करने का प्रयत्न किया। पाकिस्थान सेना से त्रस्त काश्मीर जनता की प्रार्थना पर भारतीय सेना रक्षा के लिए भेजी गई, इस पर क्रोधित होकर पाकिस्थान की सेना भारतीय प्रदेशों पर हमला करती है। इस झगड़े का निर्णय करने के लिए संयुक्त राष्ट्र को मध्यस्थ बनाया है। सदस्यों के यह पूछने पर कि अब यह सभा किसलिए बुलाई गई है तब सभाध्यक्ष कहते हैं कि कुछ ~~लोग~~ काश्मीर निवासी पाकस्थान के अधीन होना चाहते हैं और कई ~~हिन्दुस्थान~~ भारत के अन्तर्गत आना चाहते हैं इस पर विचार विमर्श करना है तब एक सदस्य कहता है कि बहुमत की जय होनी चाहिए इसलिए काश्मीर भारत के अन्तर्गत आ जाना चाहिए। इस उक्ति पर सभी सभासद बड़े प्रसन्न होते हैं किन्तु मुखर्जि महाशय को अत्यधिक शान्ति से भी चिढ़ है इसलिए वे कहते हैं कि शान्ति की मर्यादा होनी चाहिए अतः यदि समस्या और किसी तरह नहीं सुलझती तो युद्ध अवश्यम्भावी है और युद्ध द्वारा

स्पर्धमस्माक भरतश्चपूर्वमुत्साह तनोतीति श्रूयते । अनेनेकोपस्थातव्य मस्माभिः ।
अर्थात - दक्षिण कर्णाटक मे सुशोभित होते हुए पेरडाल महाजन संस्कृत पाठशाला मे साहित्य शिरोमणी कक्षा के अन्तिम वर्ष के विद्यार्थी की अवस्था मे वर्तमान तथा बाल्य काल मे कुम्भज संस्कृत पाठशाला मे अध्ययन किया होने के कारण रची गई ~~यह नवीन कृति~~ 'काश्मीर सन्धान समुद्यम' नामक यह नवीन कृति जो भारत में अत्यन्त उत्साह ~~का~~ [illegible] काबिल है अभिनय करना चाहिए।

प्रथम दृश्य मे — श्यामप्रसाद मुखर्जि क्रोधित मुद्रा मे प्रवेश करते हुए कहते हैं कि मुखर्जी के जीते जी काश्मीर शत्रुओं के हाथों मे नहीं जा सकता और न ही इसका विभाजन किया जा सकता है। लियाकत अली के सम्पूर्ण स्वप्नों के महल गिर जायेंगे। केन्द्र शासन सभा मे भी काश्मीर का प्रश्न ही उठाया जायगा यही सोचते हुए वे काश्मीर के सौन्दर्य का वर्णन करते हैं इतने मे ही डा० एन बी खरे प्रवेश करके अपना परिचय देते हैं कि वे सनातन धर्म की रक्षा के लिए स्थापित की हुई हिन्दुमहासभा के सदस्य हैं। मुखर्जि महाशय उनसे भी काश्मीर समस्या के बारे में वार्तालाप करते हैं। खरे महाशय के विचार मे काश्मीर समस्या का अन्त सब्री संयुक्त राष्ट्र संघ के फैसले के साथ ही हो जायगा। किन्तु मुखर्जि को इसविषय मे सन्देह है। वे अखण्ड काश्मीर चाहते हैं काश्मीर को विभक्त करने को वह बहुत ही पाप पूर्ण कृत्य समझते हैं। खरे महाशय को मुखर्जि विश्वास दिलाते हैं कि वे अपने जीते जी काश्मीर समस्या का समाधान करेंगे. इस वार्तालाप के बाद दोनों ही केन्द्र शासन की सभा में वादविवाद के लिए प्रवेश करते हैं।

द्वितीय दृश्य मे — पाकिस्थान का प्रधान मन्त्री लियाकत अली को दिवास्वप्नों मे डूबा हुआ है. वह पाकिस्थान बन जाने से और इस्लाम धर्म का आधिकाधिक प्रचार होने से काफी बड़ा प्रसन्न है। अब उसकी यही इच्छा है कि काश्मीर भी किसी न किसी ढंग से मुसलमानों के लिए हस्तगत हो जाय। संयुक्त राष्ट्र द्वारा काश्मीर समस्या का निर्णय करने के लिए भेजे गये श्री ग्राहाम को भी वह अपनी ओर कर लेना चाहता है। इसलिए जब उसे सूचना मिलती है कि ग्राहाम विमान द्वारा आ पहुंचे हैं तो वह पहले ही उनसे करने वाले वार्तालाप के विषय मे सोच रखता है जिससे ग्राहाम यह

'भारत माहात्म्य'

'काश्मीर सन्धान समुद्यमः' 'रूपकम्'

कवयिता - नीपाजे भीमभट्टः साहित्य शिरोमणिः। 1954 में अमृत वाणी पत्रिका द्वारा प्रकाशित किया गया है। 30 पृष्ठों का रूपक है। इसका प्राक्कथन (श्री) शमा भट्ट प्रिंसिपल (महाजन संस्कृत कालेज) ने लिखा है। यह रूपक लेखक की विद्यार्थी अवस्था की कृति है। किन्तु भाषा की प्रौढ़ता और विषय की दुरूहता को देखते हुए सहसा विश्वास नहीं हो पाता कि इतनी अल्पायु में लिखा हुआ ग्रन्थ है। किन्तु कालिदास की उक्ति 'गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः' के अनुसार ही लेखक के ऊपर पूर्णतया लागू होती है। भाषा के सम्बन्ध में विद्वान लेखक विज्ञापना में स्वयं लिखता है —

"इदानीन्तनव्यवहारेषु प्राचुर्येण प्रयुज्यमानाः शब्दा एवास्मिन् ग्रन्थे गैर्वाण्यां मया प्रयुक्ताः। प्राचीन भाषैकपक्षपातिभिः क्षन्तव्योऽयमित्यभ्यर्थ्यते।"

अर्थात् आधुनिक काल में अधिकतर प्रयुक्त होने वाले शब्दों का ही मैंने संस्कृत में प्रयोग किया है, केवल प्राचीनता का पक्ष करने वालों से मैं क्षमा प्रार्थी हूँ।

कथानक —

नान्दी के पश्चात सूत्रधार और पारिपार्श्वक परस्पर वार्तालाप करते हुए भीमभट्टः के नवीन नाटक 'काश्मीर सन्धान समुद्यमः' का परिचय देते हैं और उसी का अभिनय करने की तैय्यारी करते हैं। स्वयं लेखक का अपना परिचय देने का ढंग बड़ा ही नम्र और सुलझा हुआ है —

दक्षिण कर्णाटक मध्यविद्योतमान पेरडाल महाजन संस्कृतमहापाठशालायां साहित्यशिरोमणि तुर्यवर्ग विद्यार्थिदशायां वर्तमानेन कुम्भजे संस्कृत पाठशालाऽधिगत बाल्यविद्याभ्यासेन श्रीमता नीपाजे भीमभट्टेन रचितं काश्मीर सन्धान समुद्यमाख्यं नवीनं

हस्तेनैकेन खड्गं सपदि धृतवता वैरिनाशोद्यतेन
छित्वा शीर्षाण्यरीणां सरभसमभितो रोषतो भीषणेन ।
साम्राज्यं सर्वमेतत दिशि दिशि च यशः कान्तिदीप्तं विधाना
हस्तेनान्येन शीर्षोपरि तव मुकुटं धारयिष्यामि राजन ॥ पृ० ३६, श्लोक ३६.

कहीं कहीं पर प्रचलित मुहावरों का प्रयोग भी बहुत सुन्दर किया है —
'इतो व्याघ्रस्ततः सर्प' इत्यादि दारुणा भाविया दशा । एकतः साम्राज्यनाशचिन्ता । अन्यतो भारतस्य बलप्रयोगः । पृ० ३७.
पटेल – निजाम । अलमति वञ्चनया । पाकीस्तवे । अलमलमधिक-प्रसङ्गेन आसन्नविनाशोऽसि उक्तं हि 'विनाश काले विपरीत बुद्धिः' रीति । पृ० ३४.

अस्मन्मतानुरोधिभिर्युक्तमाचरितम् । कैश्चित्तु किञ्चिन्मात्रमहङ्कारप्रदर्शनं कृतम् ।
तथापि निर्गतिकैरस्मदाज्ञा यथाकालं परिपालिता । पृ० २८,

अर्थात – अंग्रेजों ने अपने देश में जाते समय अपने आश्रित राज्याधिकारियों को भी स्वतन्त्र घोषित कर दिया। इससे उनका अभिप्राय देश की एकता को नष्ट करने का था। फिर भी भारत के अन्तर्गत आये हुए आश्रित राज्यों को भारत गणराज्य की अधीनता स्वीकार करनी ही पड़ेगी, ऐसी सूचना हमने सभी स्थानों पर भेज दी है। हमारी आज्ञा के महत्व को ~~सब~~ और अपने राज्यों की स्थिति और गति देखते हुए ~~सभी~~ बहुत से अधिकांश राज्यों ने हमारे मत के अनुसार ही आचरण किया है। किसी किसी ने थोड़ा सा अहंकार का प्रदर्शन भी किया है, फिर भी अन्य कोई गति न होने के कारण हमारी आज्ञा का पालन किया है।

'शैली'

राजनैतिक विषयों से सम्बन्धित नाटकों की शैली में और भाषा में थोड़ी बहुत रुक्षता आ ही जाती है किन्तु भीम भट्ट जी की यही विशेषता है कि उन्होंने नाटक में सरसता का संचार आरम्भ से अन्त तक किया है। विषय रुक्ष है किन्तु उसे प्रस्तुत करने का ढंग बड़ा ही सरस है। उपमाओं तथा प्रचलित मुहावरों के प्रयोग से भाषा में सजीवता आ गई है। लियाकत अली खां को अपने पद की चिन्ता है इसलिए वह निजाम की शक्ति को बढ़ा चढ़ा कर बोलता है जिससे निजाम उस पर प्रसन्न है और उसका प्रधान मंत्री का पद सुरक्षित रहे. उसकी उपमाएं एक से एक बढ़ कर हैं —

सिंहस्य भीतिरिव नागघटाविनाशे
वज्रस्य पर्वतसमाहतताविव शक्तिशङ्का ।
भानोः प्रभाव इव शैत्यविचारचर्चा,
सर्वैर्दुरूहपतना हि निजामशक्तिः ॥ पृ० ३५, श्लोक ३५.

वीर रस का सुन्दर परिपाक निम्नलिखित श्लोक में हुआ है।–

इस अत्याचार का उत्तर पटेल इन शब्दों में देते हैं। ऐसा अत्याचार देख कर भारत के वीर लौह पुरुष चुप न बैठ सके. अपने तेज को सहस्र गुण करते हुए वे कह उठे —

उद्यत्तेजः प्रभाव प्रतिहत जनता कष्टराशे समग्रे
सैन्यस्यात्मत्प्रयुक्त प्रार्थित बलवतो युद्ध कार्योद्यतस्य ।
सामर्थ्याद्द्वितीयाद्धत सकल मेरस्सर्वतो नष्ट धैर्ये
नश्यत्वाशवेवं रिपवः जगति सुखमथ प्राप्नुवन्तु प्रजास्ताः ।। पृ० २७, श्लोक २२.

अर्थात — अत्यन्त तेज के उदय होने पर उसके प्रभाव से जनता के ~~समस्त~~ सम्पूर्ण कष्ट समूह का नाश हो जायगा। युद्ध के लिए उद्यत हुए हमारे अत्यन्त विपुल सैन्यको सैनिक अद्वितीय सामर्थ्य से कालिम रिपुओं के सम्पूर्ण धैर्य को नष्ट करेंगे ~~संसार में प्रजा को सुख पहोंचे~~ जिससे सम्पूर्ण प्रजा को सुख मिलेगा।

जिस समय अंग्रेज भारत को छोड़ कर गये उस समय उन्होंने कपटता पूर्ण सभी छोटे छोटे राज्यों को भी स्वतन्त्र कर दिया जिससे उनमें परस्पर फूट पड़ जाय और वे भारत गण राज्य से अलग हो कर स्वतन्त्र रूप में रहे। किन्तु भारत के लौह पुरुष पटेल ने ~~यह~~ ऐसे समय में बहुत ही सोचविचार कर सम्पूर्ण राज्यों को एक ही भारतीय गण राज्य में सम्मिलित कर दिया। इसी बात की पुष्टि स्वयं जवाहर लाल नेहरू भी करते हैं।

नेहरू — आङ्ग्लैः स्वदेशगमनावसरेऽश्रित राज्याधिपतीनामपि प्रदत्तं हि स्वातन्त्र्यम्। अनेन राष्ट्रस्य विनाशनामभिप्रायस्तेषां ध्वन्यते। तथापि भारतान्तर्गतानामाश्रित राज्यानां भारत 'गणराज्या'धीनता अवश्यमभ्युपगन्तव्येत्यस्माभिः सुस्पष्टं निवेदितास्तदीयपालकास्सर्वेऽपि। अस्मदाज्ञा गौरवं स्वकीय राज्यास्थितिगती च विचारयद्भिः परश्शतैराजभिराश्रित राज्य पुनर्घटनावसरे

भारत की राजनीति :— ~~चरित्र चित्रण~~ !

हैदराबाद विजयः पूर्णतया राजनैतिक नाटक है इसमे ~~भारत की~~ स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात भारत की ~~राजनैतिक~~ हैदराबाद के साथ कैसी नीति रही इसका बड़ा ही स्पष्ट और सुन्दर निरूपण हो। भारत की नीति अहिंसावादी है किन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं है कि वह अपने ही देश के भीतर हो रहे अत्याचार को चुपचाप इसलिए सहता रहे कि युद्ध कहीं भी किसी प्रकार भी नहीं होने देना ऐसी नीति तो सर्वथा व्यवहार के अनुकूल नहीं होती। हैदराबाद को भारतीय गण राज्य मे सम्मिलित करके भारत ने संसार को यह दिखा दिया कि जहां भी आवश्यकता पड़े, भारत शस्त्रों का सहारा लेकर अत्याचार का अन्त कर सकता है। भारत की यही नीति पटेल के शब्दों मे मुखर हो उठी है।

पटेल - आः अत्याचारः! स्वतन्त्र भारतेऽप्येतादृशी चित्र हिंसा प्रजानाम् ? किमितम ? आराजकत्व-मनायकत्वं वा देशस्य ? नहि नहि। कासिं रिज्वे दौष्ट्यस्य परमावधिः।

नारीणां मानहानिं सुजनततिहतिं दुर्जनानां प्रभुत्वं
सैश्वर्यस्यापहारं सकलजनमनोविप्लवापादकत्वम्।
दर्शं दर्शं समग्रं मम हृदि सततं रोषणं चोग्ररूपं
सञ्जातं रज्विदर्पोद्धतगिरिकुलिशं लोकशान्ति प्रदायि ॥ पृ०२७, श्लोक, २१.

अर्थात - ओह अत्याचार है! स्वतन्त्र भारत मे भी ऐसी भयानक प्रजा की हिंसा हो रही है। ऐसा क्यों? ~~देश मे इतनी अराजकता और नायक विहीनता~~ अराजकता के कारण अथवा योग्य नायक के अभाव मे? नहीं नहीं. कासिम रिज्वी की दुष्टता की चरम सीमा है।

स्त्रियों की मान हानि सज्जनों की हानि और दुर्जन लोगों का प्रभुत्व सभी मनुष्यों ~~के~~ के मन मे विप्लव को उत्पन्न करना, और सभी के ऐश्वर्य का अपहरण करना ऐसी सभी बाते देख कर मेरे हृदय मे क्रोध अत्यन्त उग्र रूप धारण कर रहा है। अब तो कासिम रिज्वी के दर्प को तोड़ कर संसार मे शान्ति की स्थापना करनी है।

अष्टम दृश्यम - समर का दृश्य है - समर क्षेत्र से कासिम रिज्वी अपने भागते हुए सैनिकों को व्यर्थ ही रोकने का प्रयत्न करता है उसकी सेना के पांव उखड़ चुके हैं अतः बहुत रोकने पर भी वीरता पूर्वक जयघोष होने पर भी वे किसी प्रकार नहीं रुकते. अन्त में निराश हो कर स्वयं भी रण क्षेत्र से भाग आता है।

नवम दृश्य में — निजाम युद्ध में अपनी हार का संवाद सुन कर बहुत दुःखी होता है। लियाकत-अली नवाब से आकर क्षमा मांगता है कि सम्पूर्ण अपराध उसी का है। उसी ने निजाम को धोखे में रखा जिससे निजाम अपनी सेना की क्षमता को आवश्यकता से अधिक समझ बैठा। निजाम लियाकत अली को को भर्त्सना पूर्वक कहता है कि यह सब दोष लियाकत अली खां और कासिम रिज्वी का ही है, उन्होंने ही इतना अधिक अपमान करवाया है। अब तो वह भारत की शरण में ही जायगा। दूसरी ओर युद्धभूमि में भारत का सेनाध्यक्ष अपनी सेना को विजय पर बधाई देता है और उनकी भूरी भूरी प्रशंसा करता है।

दशम दृश्य में - पटेल सन्तुष्ट हो कर कहते हैं कि हैदराबाद का कोलाहल ~~[illegible]~~ समाप्त प्राय हो गया है आज का दिन बहुत शुभ है। नेहरू प्रवेश कर के पटेल को बधाई देते हैं क्योंकि उन्हीं के साहस से यह सफलता प्राप्त हुई है। राजाजी भी श्री पटेल को इस स्वर्णिम सफलता पर बधाई देने आते हैं और हैदराबाद विजय का सम्पूर्ण विवरण सुनना चाहते हैं किन्तु इतने में ही दूत आ कर सूचना देता है कि सेनाध्यक्ष युद्ध भूमि से आये हैं। इस पर पटेल कहते हैं कि सम्पूर्ण विवरण सेनाध्यक्ष के मुंह से ही सुनेंगे। यहीं पर रूपक की समाप्ति हो जाती है।

बोलबाला है, इधर हैदराबाद में भी स्थिति बड़ी विचारणीय हो गई है हैदराबाद की विषम परिस्थिति पर वे नेहरू जी से वार्तालाप करते हैं। नेहरू जी राजाजी ~~है~~ को बताते हैं कि अंग्रेजों ने भारत के स्वतन्त्रता प्राप्ति के साथ अन्य राज्यों को भी स्वतन्त्र कर दिया है। किन्तु अन्य सभी स्वतन्त्र राज्य ~~के~~ तो भारतीय गण राज्य की पराधीनता स्वीकार करके एक सूत्र में बंध गये हैं केवल जूनागढ़ ~~का~~ नवाब और इधर हैदराबाद का निजाम ये दोनों ही अपनी स्वतन्त्रता के अहंकार में मत्त हैं। इतने में सरदार वल्लभ भाई पटेल भी आ जाते हैं वे भी हैदराबाद की विषम परिस्थिति से चिन्तित हैं। राजाजी और नेहरू जी उन्हें बताते हैं कि वे भी हैदराबाद की परिस्थिति पर ही चिन्तन कर रहे थे। उन्हें यह पूर्ण रूप से विश्वास है कि कासिम रिज्वी के कारण ही निजाम भारत गण राज्य के अन्तर्गत नहीं आना चाहता। नेहरू जी प्रस्ताव रखते हैं कि कुछ ही घंटों में हैदराबाद पर चढ़ाई कर देनी चाहिए पटेल और राजाजी दोनों ही इस बात का समर्थन करते हैं। हैदराबाद के रजाकार चाहे हैं तो भारत वासी ही किन्तु वे देश हित न सोच कर स्वार्थ रत हैं इसलिए सेना द्वारा उन्हें विजय करना ही उचित है॥

षष्ठ अङ्क – पटेल हैदराबाद विजय करने के लिए सेनाध्यक्ष भेजते हैं, किन्तु उसे इस बात के लिए सावधान कर देते हैं कि जो अत्याचारी हैं उन्हीं का नाश करके हैदराबाद विजय करनी चाहिए अधिक जन शोषण नहीं करना चाहिए, सेनाध्यक्ष को आशीर्वाद देकर भेजते हैं कि विजय उसी के गले में वरमाला डाले।

सप्तम दृश्य – भारत द्वारा आक्रमण होने पर निजाम बहुत घबरा जाता है वह चाहता है कि युद्ध रोक दिया जाय और शान्ति पूर्वक अन्य राज्यों के समान ही भारत गण राज्य में सम्मिलित हो जायं। किन्तु लियाकत अली खाँ और कासिम रिज्वी उसे झूठा आश्वासन देते हैं कि विजय हमारी होगी इसलिए युद्ध करना ही चाहिए। निजाम इन दोनों की बातों में आकर कहता है कि मैं तो कुछ नहीं जानता आप जो चाहें सो करें। निजाम की अनुमति से वे दोनों युद्ध के लिए प्रस्थान करते हैं।

धोबी के २ रु० २ आने हो गये ३१. जुलाई ६२ तक.

लियाकत अली खाँ भी उससे यही कहता है कि अब हमें ऐसी युक्ति सोचनी चाहिए कि हम केवल हैदराबाद के सर्वेसर्वा ही न रहकर सम्पूर्ण भारत पर अपना अधिकार जमायें। लियाकत अली की यह बात कासिम रिज्वी को अपने हृदय की प्रतिध्वनि के समान लगती है। ~~दोनों मिल कर निजाम को अपने वश में कर लेते हैं और~~ वे परस्पर अपनी वीरता का बहुत बढ़ा चढ़ा कर वर्णन करते हैं। लियाकत अली खाँ कासिम रिज्वी को महाराज के पद पर अधीष्ठित करना चाहता है और स्वयं प्रधान मन्त्री बनने के स्वप्न लेने लगता है। किन्तु उन दोनों को डर है कि निजाम भीरु प्रकृति का है कहीं बिना युद्ध के भारत के समक्ष ~~अपनी~~ समर्पण न कर दे इसलिये निजाम को पूर्णतया विचलित नहीं होने देना चाहिए उसे इसी बात पर दृढ़ रह करने का प्रयत्न करना चाहिए कि वह भारत के समक्ष कभी समर्पण न करे। अपनी इसी नीति से वे निजाम को अपने वश में कर लेते हैं।

चतुर्थ दृश्य में — भारत के गृह मन्त्री सरदार वल्लभ भाई पटेल, हैदराबाद में रजाकारों के अत्याचारों को देख कर बहुत क्रोधित होते हैं, रजाकारों का अत्याचार अब अपनी चरम सीमा पर पहुँच गया है इसलिए अब उसका कोई न कोई प्रतिकार करना ही होगा। ~~[illegible] सोचते पटेल साहिब~~

पञ्चम दृश्य में — राजगोपालाचार्य चिन्तन की मुद्रा में दृष्टिगोचर होते हैं. माउन्ट बेटन का स्थान अब राजाजी ने ग्रहण किया स्वतन्त्र भारत के प्रथम गवर्नर जनरल अब राजाजी ही हैं. उन्हें इस बात का बड़ा दुःख है कि स्वतन्त्र भारत के महाशिल्पी महात्मा गान्धी को भी गोडसे नामक मनुष्य पशु ने मार डाला। ठीक भी है ~~इस~~ यह स्वार्थी संसार ~~है~~ महात्मा गांधी जैसे सत्पुरुषों के रहने के योग्य भी नहीं है। स्वतन्त्रता प्राप्ति तो हो गई किन्तु लोग अपने अपने स्वार्थ के वशीभूत होकर परस्पर वैमनस्य करते हैं, राष्ट्र में ईर्ष्या और द्वेष का

इसके पश्चात् प्रथम दृश्य मे एक स्त्री रजाकार एक स्त्री का पीछा करते है।
स्त्री सहायता के लिए चिल्लाती है किन्तु वहां उन तीनो रजाकारो के अतिरिक्त और
कोई [illegible] नही है इसलिए वे उसका अपमान करते हुए कहते है कि अब तो हमलोगो के अतिरिक्त
तुम्हारा कोई भी निकट सम्बन्धी नहीं है अतः हम मे से ही किसी का वरण करलो। स्त्री मृत्यु का
आलिंगन करना चाहती है तो वे दुष्ट अत्याचारी रजाकार उसे और अधिक अपमानित करते
हैं. इतने मे कुछ अन्य रजाकार भी आ जाते है वे पहले रजाकारो की हंसी उड़ाते है कि
~~उनसे सभी~~ वे सब एक स्त्री को वश मे नहीं कर सके। सैनिकों के परस्पर वार्तालाप करने मे
वह स्त्री चुपचाप भाग जाती है, किन्तु वे लोग पुनः उसको पकड़ लेते है और उस पर मनमाना अत्याचार
करते हैं।

दूसरे दृश्य मे - एक नित्यानन्द शास्त्री नामक हिन्दु व्यक्ति मुसलमानो जैसा वेश धारण करके विचरण
करता है. इतने मे एक हिन्दू सिक्ख मुसलमान फौजी डर रहे होते हैं उसे दृष्टिगोचर होता है। पास
आने पर उसे मालूम होता है कि वह उसका मित्र रामानन्द शास्त्री ही है। उसका भय दूर
करता हुआ वह उसे नमस्कार करता है किन्तु रामानन्द ~~शास्त्री~~ शर्मा उसके मुसलमानों जैसे वेश
परिधान के कारण उससे डरता है और उसके समीप नहीं आना चाहता. नित्यानन्द शास्त्री
जब अपना पूरा परिचय देता है तब उसका भय दूर होता है। नित्यानन्द रामानन्द शर्मा
को बताता है कि उसने अपना वेश विपर्यास मुसलमानो के डर से ही किया है क्योंकि कासिम
रिजवी के नेतृत्व मे जितने भी मुसलमान रजाकार है वे मुसलमानो को तो जातिप्रेम
के वशीभूत हो कर छोड़ देते हैं, किन्तु हिन्दुओं को मृत्यु के घाट उतार देते है। कासिम रिजवी
का उद्देश्य तो राष्ट्र की एकता को तोड़ना, संकुचित जाति प्रेम के वश मे हो कर हिन्दुओं से
विद्रोह करना और मुसलमानों के राज्य का विस्तार करना ही है। इतने मे पुनः रजाकारों का
कोलाहल सुनाई देता है, जिससे यह ये दोनों उस भीषण स्थल से हट जाना ही उचित समझते
है।

तृतीय दृश्य मे — कासिम रिजवी और लियाकत अली का परस्पर वार्तालाप होता है। कासिम रिजवी को
इस बात का बड़ा अभिमान है कि हैदराबाद मे उसका ही अत्यधिक प्रभाव है।

एकाङ्क रूपकम् — हैदराबाद विजयः — अमृत ~~पत्रिका~~ वाणी (वार्षिकी संस्कृतसद्धृ पत्रिका)
कवयिता ~~लेखक~~ - नीर्पजे भीमभट्टः (संख्या १३, १९५४)

लगभग २५ पृष्ठों का एकाङ्की रूपक हैदराबाद विजय अपने ढंग का एक नवीन ~~ही~~ रूपक है। विषय की दृष्टि से भी और विषय के अत्यधिक आधुनिक होने ~~की~~ की दृष्टि से भी। अभी भारत की स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात हैदराबाद में जो विप्लव हुआ और साथ ही उसका सशमन भी किस री रीति से किया गया इसका बड़ा ही सुन्दर निरूपण श्रीनीर्पजे भीम भट्ट ~~जी~~ ने किया है। अत्याधुनिक राजनैतिक घटना को नाटकीय रूप में प्रस्तुत करना अत्यधिक कठिन है लेकिन भीमभट्ट की लेखनी द्वारा यही कार्य अत्यन्त सरल ही नहीं सरस भी हो सका है, इसमें लेखक प्रशंसा का पात्र है। किस प्रकार हैदराबाद का निजाम लियाकत अली और कासिम रिज़वी के झूठे आश्वासनों से धोखा खाता है तथा फिर उसका दुष्परिणाम भोगता है तथा भारत जैसे विशाल देश से द्रोह करना कितना खोखला पूर्ण प्रयास है - यही बताना मानो लेखक का उद्देश्य है।

कथानक —

नान्दी के पश्चात सूत्रधार और नटी लेखक भीम भट्ट द्वारा रचित अति-आधुनिक एकाङ्की नाटक 'हैदराबाद विजय' का अभिनय करने के लिए उद्यत हैं। किन्तु ~~नट~~ नटी को सन्देह है कि आधुनिक समय में जनता पाश्चात्य प्रयोग को अधिक महत्व देती है, अतः संस्कृत भाषा ~~मय~~ में ~~की~~ की हुई रूपक रचना का स्वागत नहीं हो सकेगा और फिर 'काश्मीरसन्धान-समुद्यमः' नामक लेखक का पहला नाटक तो स्त्री पात्र से रहित था शायद इस नाटक में भी वही दोष हो इसलिए जनता उसका स्वागत नहीं करेगी किन्तु सूत्रधार उसे आश्वासन दिलाता है कि स्वदेश प्रेम में ~~सभी~~ पगा जनता विद्वान समूह अवश्य इसका आदर

सम्पूर्ण नाटक पहले उद्यम पत्रिका में छप चुका था इसका विवरण देते हुए स्वयं लेखक लिखते हैं—

As usual, by the good graces of the udyama patrika, I have been enabled to publish the play ~~it~~ in it's special numbers and collect a few reprints for publication in book form. — Author's preface. (उद्यम १९४७)

वैसे देखा जाय तो भारत के अधिकतर घरों का यही हाल है जहां सास और बहू का निरन्तर झगड़ा चलता रहता है. और इसी कारण घर की शान्ति नष्ट हो जाती है। श्री महालिङ्ग शास्त्री ने इस झगड़े की उपमा अहि नकुल जैसे के झगड़े के साथ दी है। ~~सास~~ एक दूसरे को कटुवचन सुनाने में कोई भी कम नहीं है। छागल नहीं मिलता तो उसका दोष भी सास बहू पर ही लगाती है। इसीलिए पिप्पली शम्पा से कहती है —

कुतो मे विभवस्तामपाकर्तुम् । तेन ह्यस्मि स्वयमपक्रान्ता निर्याते च मयि सा दुर्भर्षणा अभिशन्त्री किं वा दुराचरित अपाभाषिष्ट वा ईश्वरो वेद । येनोद्विग्नो मानी मम वत्सः मृत्युमपि वरमगंस्त । पृ० २६

अर्थात - मुझमे इतनी शक्ति कहां कि उसे परे हटा दूं. मैं स्वयं ही उससे दूर हट आई हूँ। मेरे इधर चले आने पर इस निर्दयी कठोर वचन बोलने वाली ने पता नहीं क्या किया अथवा कहा होगा ईश्वर ही जानता है जिससे उद्विग्न हो कर अभिमानी आत्माभिमानी मेरा पुत्र मृत्यु को भी अच्छा समझने लगा।

भाषा प्रयोग की कतिपय विशेषताएं — श्री शास्त्री की भाषा आरम्भ से अन्त तक प्रसाद गुण से युक्त है। सरल भाषा और प्रचलित में शब्दों का प्रयोग नाटक को बहुत अधिक सजीव और आधुनिक युग का अक्षरशः प्रतीक बना देता है। कुछ उदाहरण दीजिए - जिनमें मुहावरे और लोकोक्तियां को नवीन रूप दिया गया है —

1. अहो स्नेह शोषणः कालमहा ऊष्मा ।। पृ० ४.
2. उदारः समभ्यासः पृ० ५.
3. मनोरथोच्चयासिद्धि भावनापक्ष[illegible]ताव च्छेदक पर्यायं पुत्रभाण्डम् ।। पृ० ८.
4. पाश्चात्य काव्य का बिम्ब ग्राहिणामाधुनिकसुधीयाम् ।। पृ० ८.
5. प्रवादापवाद विवादानाम भूमिर्नाम नगर संवासः ।। पृ० १२.
6. कुतः कूष्माण्डमन्थानि छादयामि ।। पृ० २३.
7. अहो प्रसन्नो मे तर्कः ।। पृ० ३४.
8. वासश्च सख्यात्मजो - तीरे कैरसालतालकदलीन्यग्रोधपूगावृते । पृ० ३६.

सास बहू का झगड़ा

ग्रामीण जीवन

वज्रघोष जब इसे यह बताता है कि तुम्हारा वञ्चना के साथ विवाह इसलिए किया जा रहा है कि उसका पिता तुम्हें इ[illegible] जाने का खर्चा देगा तो उसे बहुत दुःख होता है वह अपने आप से कह उठता है –

छगल – (स्वगतम्) अहो! धिक्! किं मामेव विक्रीयमन्मार्गव्ययमर्जयिष्यति पिता! अहो अर्थलुब्धस्य शाठ्यम्। अद्यावधि नावेदयति किञ्चिन्मयि मदालम्बनमेव संकल्पितम्। ऐतिहासिके खलु काले पितुः एवं पुत्र आसीदिति शुश्रुम। (पृ० १४.)

~~अस्तु~~

छगल की माता का उसकी बड़ी बहू के साथ सदैव झगड़ा रहता है। पिता केवल पैसे के पीछे पागल हुए हैं। इस परिस्थिति को देख कर छगल का मन अत्यन्त खिन्न हो उठता है और सम्पूर्ण घर का चित्र उसके समक्ष स्पष्ट हो जाता है। ऐसे विषमय वातावरण से दूर जा कर वह अपनी प्रिया मञ्जुला की स्नेहमयी शीतल छाया में जाना चाहता है।

अर्थानातुरकातरो मम पिता पुत्रगण्डेन वाञ्छ–
त्याराद्र्जीयितुं निधाय पुरतो वञ्चनावञ्चनां मे।
शश्वापिञ्जालिं वर्ततेऽहिनकुलं हिडम्बन्तदुरन्तं
चेतो धावति मञ्जुलां प्रणयिनीं श्लाघते मद्वासम्॥ पृ० २१.

१. पहले - अपने अंग्रेजी पढ़े लिखे पुत्र के बारे में वह सदैव दिवास्वप्न में डूबा हुआ बातें करता है तभी कहता है -

उत्तीर्य सिन्धुमुपगम्य सितावनिं तां तीरे विधाय वसतिं तमसापगायाः ।
ऊनद्विवर्षसमयेन गृहीतमुद्रो राज्यश्रिया समुपयास्यति दीप्यमानः ॥ पृ० ६. श्लोक ११.

अर्थात - समुद्र के पार इंग्लैण्ड भूमि में जा कर टेम्स नदी के किनारे दो वर्ष रह कर (मेरा पुत्र) कोई अच्छी सी उपाधि लेकर आयगा और यहां आकर कोई ऊंची सरकारी नौकरी से आलोकित होगा"।

छागल - किन्तु उसका पुत्र छागल उसकी सम्भावनाओं और आशाओं के बिलकुल विपरीत कार्य करता है। उसे ग्राम का जीवन रुचिकर होना तो दूर रहा घृणास्पद लगता है. जहां उसने अपने बचपन के सुनहले दिवस व्यतीत किये अब वहीं रहना उसके लिए एक दिन भी काटना उसे असह्य प्रतीत होता है. यह सब पाश्चात्य विद्या ग्रहण करने का ही प्रभाव है. भारत का प्रधान कर्म कृषि कार्य भी उसे पशुवृत्ति ही लगता है।

छागलः - अहो ग्रामवासस्य विनोदोपलम्भकार्पण्यम् ।
पशुप्रायमत्रत्यानां जीवनम् ।

यतः

हंस्नापयन्ति महिषान् सपलालहस्ताः क्षेत्राण्यटन्ति बहु कर्दमदुस्तराणि ।
भुक्त्वा स्वपन्ति कलहान् विदधत्यनन्तान् लोके स्थितास्थितपदत्वमभी न तु चेतयन्ते ॥ पृ० १० श्लोक २३.

अर्थात –
गांव में रहने से तो जंगल में रहना अधिक उचित है जहां पक्षी और मृग वृक्षों के कोटर भाग में रहते हैं।

२ ~~अतः~~ किन्तु अन्त में अपने पुत्र के व्यवहार से दुःखी कुक्कुट स्वामी ही कहता है –

वज्रघोष ! अद्य मम हृदयारुन्तुदं मन्त्रयसे । व्रजतु वा आङ्लदेशं मा वा मम पुत्रकः । किं मे अनेन इतः परं भविष्यति ? तादृशानां नूतनमनुष्याणां संबन्धे वृद्धानुमतमन्तरेणैव गान्धर्वविधिना निर्वृत्ते पुत्रस्तन्मयत्वं प्रतिपद्य पितुरपि प्रत्यभिज्ञायां संशयो जायेत । ते च विरलेष्वपि गमनागमनेषु ग्रामीणपामरं मां जानन्तः व्रततब्यातिकटप्रापितलाघवं शतमुखमुपक्षेपेण । ततश्च पुत्रस्य पौत्रस्य सौभाग्योन्नतिषु मम का श्लाघा निर्वृतिर्वा स्यात । तदुपसर्पणजातप्रभावस्य कस्यचित्पानीयवाहकस्याप्यवरे गण्यमानः कुत्रापि दूरकोणे तेनैव इतरैश्चापि कीर्येय उपसवत । — पृ० ३-६,

अर्थात – वज्रघोष, आज तुम मेरे हृदय ~~घाव को क्यों~~ को घायल करने वाली बात कहते हो। मेरा पुत्र इंग्लैण्ड जाय अथवा न जाय।

उसे इस बात की ग्लानि भी होती है कि वह आज तक अपने बड़े पुत्र का केवल इसीलिए तिरस्कार करता रहा कि वह अंग्रेजी पढ़ा लिखा नहीं है और घास का काम ही देखता है। यहीं पर 'उभय रूपकम्' की समाप्ति होती है।

'चरित्र चित्रण'

'उभय रूपकम्' नाटक में हमें चरित्र की दृष्टि से तीन मुख्य ~~व्यक्ति~~ पात्र दृष्टिगोचर होते हैं। कुक्कुट स्वामी, बागल और वज्र घोष।

कुक्कुट स्वामी — एक ऐसा व्यक्तित्व है जो स्वयं ग्रामीण है लेकिन ग्राम्य जीवन को हेय समझता है। स्वयं अंग्रेजी भाषा नहीं पढ़ा हुआ लेकिन अंग्रेजी पढ़े लिखे हुए पुत्र पर उसे बड़ा मान है और साथ ही साथ अंग्रेजी पढ़े लिखे हुए व्यक्ति का मूल्य इसने इतना ऊँचा आँका हुआ है कि वह अपने लड़के का विवाह करने पर तभी राजी होता है यदि कन्या पक्ष वाले लड़के का इंग्लैण्ड जाने का पूरा खर्चा उठावें। ऐसे व्यक्ति हमारे समाज में उन्नति के लिए निश्चय ही बहुत बड़ी बाधा हैं। जो कुछ हमारे समाज की परम्परा में नहीं है उसे बलपूर्वक अपने समाज में ~~लम~~ ले आना निश्चय ही हानिकारक सिद्ध होता है। कुक्कुट स्वामी अपने बड़े लड़के को, जो घर का कार्य भी करता है और अपने पिता की आज्ञा का पालन भी करता है, ~~से कुक्कुट स्वामी~~ तिरस्कार की दृष्टि से देखता है किन्तु अपने अंग्रेजी पढ़ेलिखे पुत्र की सदैव प्रशंसा करता है। किन्तु अन्त में जब छोटा लड़का बागल ही, जो अंग्रेजी में निष्णात है, उसकी बात नहीं मानता तो उसकी आँखें खुलती हैं।

कुक्कुट स्वामी स्वयं ग्राम का रहने वाला है लेकिन स्वयं ही ग्राम के विषय में उसकी धारणा बहुत ही हीन है —

तेन हि ग्रामवासादरण्यवासः श्लाघनीयतरः। यत्र वृक्षकोटरेषु गुहागर्भेषु च ~~क~~ खग मृगास्तिष्ठन्
भुज्यते। पृ० ५.

'छीछीनी से छागल नदी में स्नान करने जा रहा हूँ' ऐसा कहकर गया था किन्तु अभी तक लौट कर नहीं आया। किसी ने उसे उधर से आते हुए भी नहीं देखा और उसके कमरे में उसी के हाथ का पत्र लिखा हुआ मिला है। यह सुन कर उसकी माँ उच्च स्वर से रोने लगती है, पिता कुक्कुट स्वामी भी बहुत व्याकुल हो जाता है, सम्पूर्ण गांव वालों को उसे ढूँढने के लिए भेज देते हैं। ~~सब का~~ व छागल के कमरे का निरीक्षण करने पर कटे हुए छोटे छोटे बालों की पोटली मिलती है जिसे वे लोग जहर समझते हैं, गांव के वैद्य को बुलाया जाता है जो उसका निरीक्षण करने पर भयंकर जहरीला पदार्थ बताता है। इस पर छागल के माता-पिता पर शोक की नई लहर दौड़ जाती है। वे समझने लगते हैं कि उनके पुत्र ने विष खाकर आत्महत्या कर ली है और यह पत्र उनके लिए छोड़ गया है। इतने में ही वज्रधाम आ जाता है, वह पानी में डाल कर देखता है तो मालूम हो जाता है कि वे कटे हुए हजामत के बाल हैं। वे लोग यह बात कर रहे होते हैं तो इतने में हुक्कू शाम्बर छागल द्वारा दिया हुआ पत्र लाता है। वे लोग अत्यन्त उत्सुकता वश पूछते हैं कि क्या तुमने छागल को देखा है। वह बताता है कि छागल को देखा ही नहीं उसे सकुशल रेलवे स्टेशन पर पहुंचा कर आ रहा हूँ और साथ में ~~उसने~~ ~~यह पत्र भी दिया है~~ छागल द्वारा दिया हुआ पत्र भी दिखाता है। पत्र में छागल एक दम बिना पूछे हुए ~~अ~~ अपने अध्यापक के साथ आ जाने के कारण क्षमा मांगता है और साथ में इस बात की भी क्षमा मांगता है कि वह वञ्चना से विवाह नहीं करना चाहता। इस पत्र से जहां उसके पिता कुक्कुट स्वामी को यह आश्वासन मिलता है कि उसका पुत्र छागल सकुशल जीवित है वहां उसे इस बात का अत्यन्त दुःख होता है कि उसका पुत्र भी पाश्चात्य शिक्षा दीक्षा के कारण उसकी बात नहीं मानता और सदैव अपने मन की बात करता है। उस समय उसकी आंखें खुलती हैं और वह कहता है कि अब यदि वह उसकी बात ही नहीं मानता तो चाहे इंग्लैण्ड जाय चाहे न जाय उसे किसी प्रकार की इच्छा या आकांक्षा नहीं रही साथ ही

उसे भी भाग लेना होता है और कुछ प्रबन्ध भी करना होता है। रेलवे टाइम टेबल से डागल को मालूम होता है कि साढ़े ११ बजे गाड़ी छूटती है और उस समय ~~८~~ बजे होते हैं। रेलवे स्टेशन पर पहुंचने का समय बहुत कम है इसलिए वहां ठीक समय पर पहुंचने के लिए वह सभी कार्य बड़ी शीघ्रता से करता है। किन्तु उसकी हजामत नहीं हुई है। ~~था~~ और गांव होने के कारण वहां शीघ्रता से नाई का प्रबन्ध भी नहीं हो सकेगा ~~इसलिए वह स्वयं ही अपनी हजामत करने लगता है~~ क्योंकि गांव में नाई को काम अधिक नहीं होता इसलिए नाई एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूम घूम कर हजामत बनाता है। डागल स्वयं ही अपनी हजामत करने लगता है। वह अपनी भतीजी शिक्षिनी से कहता है कि आज वह नदी पर स्नान करने जायगा और फिर वह उससे थोड़ा सा जल लाने के लिए कहता है। वह जल लाने में विलम्ब करती है इतने में एक नौकर जो वृद्ध शम्बर जो नांद में जल डालने के लिए ले जा रहा होता है उसी से थोड़ा सा जल लेकर और सभी दरवाजे बन्द करके डागल अपनी हजामत बनाने लगता है। वृद्ध शम्बर से वह बाहर ही खड़े रहने के लिए कह देता है जब तक वह उसे पुनः न बुलाये। बन्द कमरे में हजामत करके वह कटे हुए छोटे छोटे बालों को एक कागज की पुड़िया सी बना कर वहीं रख देता है। इसके पश्चात वह अपनी पेटिका में से एक और कागज निकालता है जिसमें उसके ~~द्वारा~~ आ अभिनय करने वाला भाग लिखा हुआ है किन्तु शीघ्रता के कारण ~~वह~~ उसे पुनः पेटिका में रखना भूल जाता है, ~~उस पत्र में~~ ऐसा। वृद्ध शम्बर द्वारा उसे मालूम होता है कि इस समय उसका पिता और भाई दोनों ही घर से बाहर हैं किन्तु शीघ्रता के कारण वह समय थोड़ा रह जाने के कारण वह ~~एक उनकी इन्तजार नहीं~~ प्रतीक्षा नहीं कर सकता और भृत्य को अपना सामान (ट्रंक और बिस्तर) उठा कर रेलवे स्टेशन पर छोड़ आने के लिए कहता है, पहिले तो नौकर उसकी बात नहीं मानता फिर बाद में डागल द्वारा काफी समझाये जाने पर सामान उठा कर उसके साथ जाने के लिए तैयार हो जाता है। रेलवे स्टेशन पर जाकर डागल अपने पिता के लिए एक पत्र लिखता है। ~~कर~~ ~~फिर~~ वह वृद्ध शम्बर को देकर उसे वापिस घर भेज देता है। किन्तु इसी बीच घर में कुहराम मच चुका है। खेतों से लौट कर आये हुए बड़े भाई कुन्दोवृत्ति को वही ~~कार~~ पत्र मिल जाता है जो वास्तव में डागल की अभिनय ~~की~~ भूमिका का भाग है। उसमें पात्र अपने आप को सम्बोधित करके बड़ी निराशाजनक भाषा का प्रयोग करता है। कुन्दोवृत्ति चिल्लाता हुआ घर से बाहर आता है और कहता है कि कुन्दो

~~का बहुत मन करता था इसलिए उसे पत्र द्वारा मिलने के लिए कहा था~~ अब वह हम ~~सबसे मिलने के लिए आया~~
है। वज्रघोष को आन्तरिक रहस्य का कुछ मालूम होता है इसलिए वह उसकी बात का विश्वास नहीं करता। कुक्कुट
स्वामी को इस बात का बड़ा अभिमान है कि उसका पुत्र अंग्रेजी पढ़ता है और उसका आचार व्यवहार सभी पाश्चात्य
ढंग से होता है। वह वज्रघोष को बताता है कि उसका लड़का दो साल के लिए इंग्लैण्ड पढ़ने जायगा। फिर वहां से
कोई बड़ी सी उपाधी ग्रहण करके और यहां आकर कोई बड़ी सी नौकरी प्राप्त करेगा। बड़ा पुत्र छन्दोवृत्ति उसे इसी
लिए अच्छा नहीं लगता क्योंकि उसे पाश्चात्य ढंग से रहना नहीं आता। छन्दोवृत्ति को भी इस बात का दुःख है कि
उसका पिता छोटे भाई से अधिक स्नेह करता है और उसका तिरस्कार करता है। ~~वह एक पाश्चात्य ढंग से
रहने वाले एक व्यक्ति का अपमान भी इसी जलन के मारे कर~~ दे इसी जलन में भर कर वह अपने पिता के
सम्मुख ही एक पाश्चात्य ढंग से रहने वाले व्यक्ति का अपमान कर देता है। पिता कुक्कुट स्वामी को इस बात से बड़ा
दुःख होता है, और वह बड़ी ग्लानि में भर कर वहां से चला जाता है, उसके पश्चात् छन्दोवृत्ति भी वहां से चला जाता है।
केवल वज्रघोष ही वहां रह जाता है। पिता और पुत्र दोनों के चले जाने के बाद छोटा पुत्र छागल
घटना स्थल पर आता है। वज्रघोष से वार्तालाप के अन्तर्गत छागल को मालूम हो जाता है कि उसका पिता
उसका विवाह ~~एक ऐसी~~ वसुन्धरा नामक कन्या से करना चाहता है जिसका पिता कार्यवाहि छागल को इंग्लैण्ड जाने का व्यय देगा। लड़की
को संगीत और अंग्रेजी भाषा की शिक्षा दी जा रही है जिससे वह भी पाश्चात्य ढंग से रहना सीख जाय।
छागल को यह बात सुन कर बड़ा दुःख होता है वह नहीं चाहता कि उसका विवाह एक ऐसी कन्या से किया
जाय जिसको उसने देखा तक नहीं, केवल दहेज के कारण ही ऐसा सम्बन्ध उसे अरुचिकर मालूम होता
है। इतने में उसकी माता उसे चाय पीने के लिए बुला लेती है, चाय पीने के पश्चात् डाकिया उसे
एक पत्र दे जाता है, पत्र में लिखा होता है कि ~~जिसमें~~ उसका अध्यापक मंगलवसुशर्मा उसे अपने साथ ही गाड़ी में
लेजाना चाहता है → ~~क्योंकि आ और पत्र में उसे रेलवे स्टेशन पर मिल लेने के लिए आ जाने के लिए
कहता है लिख देता है~~ क्योंकि अगले सप्ताह को होने वाली अन्तर कालेज ड्रामा प्रतियोगिता में
→ इसलिए छागल ~~का~~ उससे रेलवे स्टेशन पर ही मिल जाये।

उभय रूपकम् – प्रहसनम् 40 पृष्ठों का

कवि सार्वभौम कवि शेखर श्री महालिङ्ग शास्त्री द्वारा रचित 'उभय रूपकम्' नामक प्रहसन, साहित्य चन्द्रशाला तिरुवालङ्गाडु तञ्जापुर डिस्ट्रिक्ट, मद्रास में १९६२ में प्रकाशित हुआ है। इस ग्रन्थ की संस्कृत भाषा में प्रस्तावना प्रो० डि० टि० ताताचार्य ने लिखी है और ~~इन्ट्रोडक्शन~~ पुस्तक परिचय (आमुख) प्रो० एम रामकृष्ण भट्ट ने दिया है।

नाटक का कथानक

आधुनिक समय में विदेशी भाषा अंग्रेजी और विदेशी वेशभूषा तथा आचार व्यवहार का प्रचलन युवक सम्प्रदाय में बहुत अधिक हो गया है। किन्तु ~~इससे~~ सीधे साधे ग्रामीण ~~जन के~~ लोगों को जो आधुनिकता में अपने आप को ढाल नहीं सकते, कितना दुःख उठाना पड़ता है। 'उभय रूपकम्' प्रहसन में इसी विषय की ओर दृष्टिपात किया गया है। कुक्कुट स्वामी अपने दोनों पुत्रों ~~के~~ कुन्दोपाटि और डागल में से छोटे पुत्र डागल ~~से~~ से अधिक ~~प्रेम~~ स्नेह करता है क्योंकि वह अंग्रेजी पढ़ा लिखा है, शहर के ~~स्कूल~~ कॉलेज में पढ़ता है और खेती बाड़ी को हाथ नहीं लगाता। बड़ा पुत्र विदेशी सभ्यता से अनभिज्ञ है जन्म से लेकर अब तक गांव में ही रहा है वहीं खेती बाड़ी करता है ~~है~~ इसलिए पिता सदैव उसका तिरस्कार किया करता है, किन्तु अन्त में आकर उसकी आंखें खुलती हैं जब उसे मालूम हो जाता है कि कौन सी सभ्यता ~~है~~ श्रेष्ठ है, भारतीय या विदेशी।

कथानक का प्रारम्भ कुक्कुट स्वामी और उसी गांव के अध्यापक ~~वज~~ वज्रघोष के परस्पर वार्तालाप से होता है। कुक्कुट स्वामी का छोटा पुत्र डागल मद्रास शहर के विद्यालय में अध्ययन करता है और गर्मियों की छुट्टियां भी वहीं व्यतीत करता है, किन्तु इन दिनों वह अपने माता पिता से मिलने गांव आया हुआ है। वज्रघोष कुक्कुट स्वामी से पूछता है कि आपका ~~लड़~~ लड़का डागल जो सदैव शहर में ही रहता है यहां तक कि ग्रीष्मावकाश में भी वहीं रहता है अब गांव में क्या करने आया है। *कुक्कुट-स्वामी ~~बहुत सा दहेज लेकर एक गांव की ओर~~ विलायत का सम्पूर्ण खर्चा लड़के के ससुराल वालों का ही हो ऐसी एक कन्या अपने लड़के के लिए ढूंढता है, वह ~~अपने लड़के को~~ और लड़के की जल्दी ही वहां विवाह हो जाय इसीलिए उसे बुलाता है किन्तु वज्रघोष के सामने वह यह रहस्य नहीं खोलता। ~~केवल इतना ही कहता है कि~~ मेरा ~~बहुत मन~~ अपने लड़के को देखने

*कुक्कुट स्वामी केवल इतना ही बताता है कि मेरा लड़का [illegible] मिलने के लिए आया है किन्तु वास्तविकता यह है

उभय रूपकम् — प्रहसनम्
40 पृष्ठों का

कवि सार्वभौम कवि शेखर श्री महालिङ्ग शास्त्री द्वारा रचित 'उभय रूपकम्' नामक प्रहसन, साहित्य चन्द्रशाला तिरुवालङ्गाडु तञ्जावुर डिस्ट्रिक्ट, मद्रास मे १९६२ में प्रकाशित हुआ है। इस ग्रन्थ की संस्कृत भाषा में प्रस्तावना प्रो० डि: टि ताताचार्य ने लिखी है और ~~इन्ट्रोडक्शन~~ पुस्तक परिचय (आमुख) प्रो० एम रामकृष्ण भट्ट ने दिया है।

नाटक का कथानक

आधुनिक समय में विदेशी भाषा अंग्रेजी और विदेशी वेश भूषा तथा आचार व्यवहार ~~के~~ का प्रचलन युवक सम्प्रदाय में बहुत अधिक हो गया है किन्तु ~~इसके~~ सीधे साधे ग्रामीण ~~जनों के~~ जनों को जो आधुनिकता में अपने आप को ढाल नहीं सकते, कितना दुःख उठाना पड़ता है। 'उभय रूपकम्' प्रहसन में इसी विषय की ओर दृष्टिपात किया गया है। कुक्कुट स्वामी अपने दोनों पुत्रों ~~के~~ कुन्दोशाटि और डागल में से छोटे पुत्र डागल ~~के~~ से अधिक ~~प्रेम~~ स्नेह करता है क्योंकि वह अंग्रेजी पढ़ा लिखा है, शहर के ~~स्कूल~~ कॉलेज में पढ़ता है और खेती बाड़ी को हाथ नहीं लगाता। बड़ा पुत्र विदेशी सभ्यता से अनभिज्ञ है जन्म से लेकर अब तक गांव में ही रहा है वहीं खेती बाड़ी करता है ~~इ~~ इसलिए पिता सदैव उसका तिरस्कार किया करता है, किन्तु अन्त में आकर उसकी आंखें खुलती हैं जब उसे मालूम हो जाता है कि कौन सी सभ्यता ~~श्रे~~ श्रेष्ठ है, भारतीय या विदेशी।

कथानक का प्रारम्भ कुक्कुट स्वामी और उसी गांव के अध्यापक ~~वक्र~~ वक्रघोष के परस्पर वार्तालाप से होता है। कुक्कुट स्वामी का छोटा पुत्र डागल मद्रास शहर के विद्यालय में अध्ययन करता है और गर्मियों ~~की~~ की छुट्टियां भी वहीं व्यतीत करता है, किन्तु इन दिनों वह अपने माता पिता से मिलने गांव आया हुआ है। वक्रघोष कुक्कुट स्वामी से पूछता है कि आपका ~~लड़~~ लड़का डागल जो सदैव शहर में ही रहता है यहां तक कि ग्रीष्मावकाश में भी वहीं रहता है अब गांव में क्या करने आया है। *कुक्कुट स्वामी ~~बहुत सा दहेज लेकर एक गांव की और~~ विलायत का सम्पूर्ण खर्च लड़के के ससुराल वालों का ही हो ऐसी एक कन्या अपने लड़के के लिए ढूंढता है। वह ~~अपने लड़के~~ को और लड़के को जल्दी ही वहां विवाह हो जाय इसीलिए उसे बुलाता है किन्तु वक्रघोष के सामने वह यह रहस्य नहीं खोलता। ~~केवल इतना~~ ही कहता है कि मेरा ~~बहुत मन~~ अपने लड़के को देखने

*कुक्कुट स्वामी केवल इतना ही बताता है कि मेरा लड़का मुझसे मिलने के लिए आया है किन्तु वास्तविकता यह है कि →

सभी इनकी स्तुति करते हैं इस पर शिव प्रसन्न हो जाते हैं और आकाशवाणी होती है कि ~~म~~ शिवजी ने प्रसन्न हो कर अंगूठा हटा लिया है और रावण को कष्ट से मुक्त कर दिया है / नारद कहते हैं ~~कि~~ मैंने जो सोचा था वही हुआ, नारद की स्तुति से शिवजी उसका कष्ट दूर करने के अतिरिक्त उ प्रसन्न होकर वर भी देंगे। इस शुद्ध विष्कम्भक के पश्चात् लंकेश्वर अपने सभी मन्त्रियों सहित भगवान शिव की स्तुति करते हैं तब शिव उन्हें दर्शन देते हैं। रावण पुनः उनकी स्तुति करके उनसे वर मांगता है कि हे शिव जी यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो मुझे उत्तम शस्त्र दीजिए जिससे मुझे कोई न जीत सके और मैं सर्वविजयी हो जाऊं परमेश्वर उस पर प्रसन्न होकर उसे वर दे देते हैं और महादीप्त चन्द्रहास नामक खड्ग दे देते हैं। साथ ही यह भी कह देते हैं कि यदि तुम इसकी पूजा करोगे तब तो यह तुम्हारे पास रहेगा यदि तुमने इसकी अवज्ञा की तो यह पुनः मेरे पास ही आ जायगा। रावण खड्ग प्राप्त करके ~~बड़ा~~ बहुत प्रसन्न होता है और एक दूसरा वर मांगता है कि यक्षों के युद्ध में जीता हुआ पुष्पक विमान जो आपकी आज्ञानुसार अचल हो गया है वह भी चलने में समर्थ हो जाय। शिवजी उसकी यह बात भी मान लेते हैं किन्तु इतने में आकाशवाणी होती है कि ऐसा नहीं हो सकता, अब जब तक विजया शापमुक्त नहीं हो जायगी तब तक यह विमान नहीं चलेगा। शिवजी प्रसन्न होकर उसे भी शापमुक्त कर देते हैं इस पर विजय प्रसन्न होकर विमान को छोड़ देती है। इस पर सभी प्रसन्न होकर अपने अपने अभीष्ट स्थानों पर चले जाते हैं, और भरत वाक्य के बाद नाटक की समाप्ति हो जाती है।

पञ्चम अङ्कः- अब इन्द्र और वाचस्पति शिवजी के दर्शन करने के लिए उपस्थित हुए हैं। नन्दी के शाप से व्योम से भ्रष्ट हुए रावण को देख कर उन्हे बड़ी सान्त्वना मिलती है। इसके पश्चात् नन्दी आकर इन्द्र और वाचस्पति का सत्कार करते हैं। वे नन्दी से शिवजी का दर्शन करने की प्रार्थना करते है, इतने मे देखते हैं कि नीचे गिरा हुआ रावण पुनः उठ खड़ा हुआ है और कैलास पर्वत को अपनी भुजाओं से उठाने लगा है। इन्द्र को विश्वास नहीं होता कि रावण मे इतनी शक्ति होगी कि वह इतने विशाल पर्वत को अपनी भुजाओं से उठा लेगा, किन्तु नन्दी उन्हे समझाते हैं कि ~~व~~ राक्षसों के लिए कुछ भी दुष्कर नहीं है। इतने मे ही सम्पूर्ण पर्वत हिलने लगता है, सम्पूर्ण पर्वतवासी भयभीत हो जाते हैं। वृक्ष ~~पर्वत~~ गिरने लगते हैं, पत्थर टूट टूट कर गिरने लगते सम्पूर्ण वातावरण क्षुब्ध हो उठता है किन्तु यह स्थिति थोड़ी देर तक ही रहती है, इसके पश्चात सब कुछ पूर्ववत् स्थिर हो जाता है। किन्तु जहाँ ~~इधर~~ कैलास पर्वत पर सब कुछ स्थिर होता है वहाँ ~~उधर~~ रावण की भयंकर चीत्कार सुनाई देती है मानो भीषण मेघ गर्जन~~न~~ कर रहे हों। ~~मालूम होता है कि~~ इतने मे सूचना मिलती है कि रावण के कैलास उठाने की धृष्टता का उचित दण्ड शिवजी ने अपने पैर के अँगूठे से कैलास को स्थिर कर के दिया है, इससे कैलास तो स्थिर हो गया है लेकिन कैलास के स्थिर होने से रावण की भुजायें पर्वत के नीचे पिस ~~जाने से~~ गई हैं और वह पीड़ा से चीत्कार कर रहा है। असह्य पीड़ा के कारण रावण अपनी सम्पूर्ण वीरता को भूल कर शिवजी की आराधना करने लगता है।

षष्ठ अङ्क में— नीचे गिरे हुए रावण की दुर्दशा देख कर, उसके मन्त्री विद्युज्जिह्व महोदर इत्यादि उसके पास पहुँच कर उसे सान्त्वना देते हैं। वे यह भी समझाते है कि उसने शिवजी के साथ वैर मोल लेकर अच्छा नहीं किया अब तो उन्हे अपनी आराधना के द्वारा प्रसन्न करना होगा।

सप्तम अङ्क में नारद, कैलास को प्रणाम करते हैं और कैलास पर्वत की स्तुति करते हैं। इतने मे उन्हे नेपथ्य मे रावण गीत की ध्वनि सुनाई देती है वे वीणा द्वारा उस गीत का अनुसरण ~~वादन~~ करते है। रावण शिव की आराधना बड़े ही करुण स्वर मे करता है। नारद ~~जी~~ को विश्वास हो जाता है कि चाहे रावण कितना ही पापी हो इस स्तुति से भगवान शिव अवश्य प्रसन्न हो जायेंगे और इसके अपराध क्षमा कर देंगे इसके पश्चात भगवान शिव के समक्ष सभी शिव पार्षद एवं हो कर उनकी स्तुति करते हैं, पुष्पदन्त, उपमन्यु, मार्कण्डेय, दुर्वासा आदि, चण्डीश आदि

जीतेगा। नारद उसे समझाते हैं कि शिव तो परमेश्वर हैं उन्हें केवल गिरीश ही न समझो। किन्तु विजय मद में चूर रावण उनकी एक नहीं सुनता और कैलाश की ओर प्रस्थान कर देता है। वह सोचता है कि कैलाश को विजय करके वह त्रिलोकी का विजेता समझा जायगा। कैलाश पर पहुंच कर उसकी महिमा देख कर रावण बहुत प्रभावित होता है। भृङ्गिरिटि आदेश देता है कि महादेव समाधिस्थ हैं इसलिए कोई राक्षस इधर आकर उत्पात न करे। रावण के सेनापति अपनी घोषणा करते हैं कि अब वह विजय करके समाधिस्थ शिव को उसके अनुचरों के रुधिर से ~~सिंचन~~ स्नान ~~करेंगे~~। स्न करायेंगे। इतने में नेपथ्य में उन्हें सुनाई देता है ~~विजया~~ पार्वती और विजया का परस्पर आलाप, जो कथा कहने में लीन हैं। राक्षसों का शोर होने पर विजया पार्वती से प्रार्थना करती है कि वे अन्दर के प्रकोष्ठ में जा कर कथा कहें। स्त्रियों की वाणी सुन कर दशानन क्षुब्ध हो उठता है और विमान राजा को ऊपर ही जा कर ठहराने के लिए कहता है। किन्तु इतने में ही एक स्त्रीवाणी के शाप देने की ध्वनि आती है, जो यह कहती है कि विमान इस स्थान से एक पग भी आगे नहीं चल सकता। दशानन को आश्चर्य होता है कि इतनी शक्ति किसमें है जो उसके विमान को रोक रही है। स्त्रीवाणी की आज्ञानुसार विमान स्तम्भित हो जाता है। इसके पश्चात क्रोधित नन्दी दृष्टिगोचर होते हैं वे दशानन को डांटते हैं कि यदि वह कोई चपलता वश दुष्कार्य करेगा तो उसे अपनी ान ~~का~~ से हाथ धोना पड़ेगा। दशानन और नन्दी का परस्पर वाग्युद्ध होता है। दशानन शिवजी के लिए भी तिशय अपमान जनक शब्दों का प्रयोग करता है इस पर नन्दी बहुत अधिक क्रुद्ध हो कर उसे शाप देते हैं कि ुम गिर जाओ नन्दी के इतना कहते ही रावण अन्तरिक्ष से नीचे गिर पड़ता है। इसके पश्चात नन्दी इन्द्र आदि श्रेष्ठ अतिथियों का आतिथ्य करने के लिए चले जाते हैं। (यहाँ चतुर्थ अङ्क की समाप्ति हो जाती है।

उसे बचाने के लिए उसी ओर भागती है। इसके पश्चात् दशानन रम्भा का पीछा करता हुआ आता है ~~उसे~~ मदन व्यथा के कारण उसके अङ्गों में विचित्र प्रकार की फड़फड़ाहट होती है। चन्द्र प्रासाद में घुस कर उसे रम्भा की छाया दृष्टिगोचर होती है किन्तु नेपथ्य में चञ्चला ~~द~~ रम्भा को वहां से शीघ्र ही चले जाने का संकेत कर देती है। दशानन उसका पीछा करता है, किन्तु मेघों के छा जाने पर उसकी दृष्टि धूमिल हो जाती है और वह कल्प वृक्ष से टकरा जाता है। पहले तो उसे कल्पवृक्ष पर क्रोध आता है, फिर कल्पवृक्ष से ही प्रार्थना करता है कि उसकी युवति-विषयक मनोकामना पूर्ण हो। इतने में दशानन के ~~द~~ मन्त्री यक्ष को पकड़ कर लाते हैं और उसे ~~प्रताड़ित करते~~ उत्पीड़ित करते हैं। यक्ष पुरुष प्रार्थना करता है कि उसे कोई भी अभय दान नहीं देता। किन्तु वे सभी मिलकर यक्ष को ~~मार~~ घायल कर डालते हैं और पुष्पक पर चढ़ कर कैलाश की ओर प्रस्थान करते हैं।

चतुर्थ अङ्क में – (विष्कम्भक में) नारद आते हैं और मरणासन्न यक्ष के समीप पहुंचते हैं। कमण्डलु के जल से उसकी मूर्छा दूर करके उसे उठाते हैं। यक्ष अभी भी राक्षसों के भय से आतंकित है। नारद उसका भय दूर करते हैं। यक्ष नारद को अपने समक्ष देख कर उन्हें प्रणाम करता है और उनकी शरण में आ जाता है। यक्ष का विमान राक्षस ले गये हैं यह जान कर यक्ष बहुत दुःखी होता है और कहता है कि इन्द्र ने जिस कार्य के लिए मुझे भेजा था वह नहीं हो सका। नारद उसे सान्त्वना प्रदान करते हुए कहते हैं कि तुम जा कर यक्षेश्वर महेन्द्र को कहो कि राक्षस स्वर्ग लोक में न आ जायें इसलिए यक्षेश्वर को ~~मन्त्रको~~ में चैतन्य हो जाना चाहिए, ऐसा नारद ने कहा है। वे ~~व~~ यक्ष को यह भी कहते हैं कि जाती बार वह भगवान शिव के द्वारपाल भगवान् नन्दी से कह दे कि पूर्व के द्वार पर वे सन्नद्ध रहें। इस विजय में प्रमाद नहीं होना चाहिए ~~ये~~। इसके पश्चात् दशानन अपने मन्त्रियों सहित विमान पर चढ़कर आकाश मार्ग से जाता है। नारद भी मेघों पर आसीन होकर उनके समक्ष चले जाते हैं। सभी लोग उन्हें प्रणाम करते हैं। नारद रावण की विजय पर उसे बधाई देते हैं। रावण उनसे उपालम्भ के स्वर में कहता है कि आप तो देवों के पक्षपाती हैं फिर भी आपने हमें बधाई दी है यह हम पर अनुग्रह ही है। रावण नारद से देवताओं का समाचार पूछता है ~~नारद~~ नारद बतलाते हैं कि देवता अलकापुरी के जीते जाने से संत्रस्त हैं, किन्तु मैंने उनसे कहा है कि आप भी युद्ध के लिए सन्नद्ध हो जाइए। रावण और अब सभी लोग कैलाश पति के पास ही पहुंचे हुए हैं। रावण इस सूचना के लिए नारद को धन्यवाद देता है, और साथ ही यह भी कहता है कि अब तो वह कैलाश को भी

हैदराबाद विजयम् प्रेक्षणक त्रयी -
काश्मीर सन्धान समुद्यमः ।

कालीपद तर्काचार्य की - प्रशान्त रत्नाकरम्
सामवतम् — अम्बिकादत्त व्यास
धर्मस्य सूक्ष्मा गतिः, वनज्योत्स्ना

छत्रपति विजयम् छत्रपति साम्राज्यम्,
कुमार रूपकम्
मूलशंकर माणिकलाल याज्ञिक - 3 नाटक

- शुद्ध विष्कम्भक -

द्वितीय अङ्क में - नारद और देवदूत परस्पर वार्तालाप करते हैं। देवदूत तुम्बुरु कोइन्द्र मिलते हैं और कहते हैं कि ~~शिवजी से~~ मिलना चाहते हैं। नारद स्वयं देवदूत का कार्य करना चाहते हैं इस पर देवदूत बड़ा प्रसन्न होता है। इधर दशानन अपने मन्त्रियों सहित विजय के मद में चूर होकर आता है और कुबेर का सिंहासन ~~मंगवाता है और~~ तथा अन्य सिंहासन मंगवाता है। सिंहासन आने पर सभी लोग सिंहासनों पर बैठते हैं। इतने में शुक और सारण दशानन को सूचित करते हैं कि यक्ष का दूत आया है, दशानन दूत को बुलाता है ~~उससे कहता~~ है दूत दशानन के सम्मुख सन्धि का प्रस्ताव रखता है किन्तु दशानन बड़े गर्व से कहता है कि राक्षस और देवताओं का तो नैसर्गिक वैर है, वृथा ~~ही~~ भ्रातृत्व भाव का प्रदर्शन करना विडम्बना ही है। रावण अपने मन्त्रियों से वार्तालाप करने लगता है। इतने में अवसर देख कर और सम्पूर्ण परिस्थिति का अवलोकन कर यक्ष अन्तर्ध्यान हो जाता है। रावण को भी बड़ा आश्चर्य होता है कि एक क्षण में ही यक्ष कहाँ चला गया। यह ~~कि~~ मानो उसकी आने वाली हार का ~~परिचय दें आयत~~ संकेत देने वाला था। रावण क्रुद्ध होकर प्रतिज्ञा करता है कि वह स्वर्गलोक को भी जीतेगा। दशानन अपने मन्त्रियों से वार्तालाप करता हुआ महोदर से कहता है कि स्वर्गलोक को जीतकर वह महोदर को भेंट कर देगा। सभी लोग मन्त्रीगण यक्षों की संभार शाला देखने चले जाते हैं। अकेला दशानन अपने मन में ही सभी विषयों पर चिन्तन करता हुआ घूमता है।

तृतीय अङ्क में — (तृतीय अंक के विष्कम्भक में) चञ्चला नामक युवती अपनी सखी रम्भा को ढूंढती है, सम्पूर्ण अलकापुरी में राक्षसों के कारण आतंक फैला हुआ है। स्त्री जनों का बाहर निकलना भय से मुक्त नहीं है। इसी लिए चञ्चला को डर है कि उसकी सखी रम्भा सकुशल हो। इतने में नेपथ्य से ध्वनि होती है कि तुम्हारी सखी चन्द्रप्रासाद के ऊपर खड़ी है और ~~उधर~~ ही दशमुख भी इसी ओर आ रहा है। चञ्चला घबराकर

'उद्गात दशाननम्' नाटकम् → (जैसा कि नाटककार ने स्वयं लिखा है ~~यह~~ उनकी ~~अभी~~ सर्वप्रथम रचना है)

श्री महालिङ्ग शास्त्री द्वारा प्रणीत प्रस्तुत पौराणिक नाटक, रावण की कथा से सम्बन्धित है। रावण अलकापुरी को जीत कर बहुत घमण्डी हो गया था अतः उसने भगवान् शिव के निवास स्थान कैलाश पर्वत को भी विजय करना चाहा किन्तु भगवान शिव ने उसका घमण्ड तोड़ कर उसकी आंखें खोल दीं और तब से वह भगवान शिव का अनन्य भक्त बन गया।

नाटक का कथानक — सूत्रधार और नटी द्वारा यह सूचना दी जाती है कि श्रीमदप्पय्य दीक्षित वंशज श्री महालिङ्ग शास्त्री द्वारा प्रणीत उद्गात दशानन नामक नाटक का ~~रचना~~ अभिनय किया जायगा। इसके पश्चात् प्रस्तावना में नन्दी और भृङ्गिरिटि का परस्पर वार्तालाप होता है। नन्दी शिव और पार्वती के परस्पर कलह को देख कर बहुत चिन्तित है। भृङ्गिरिटि के पूछने पर बताते हैं कि आज भगवान् शिव समाधिस्थ हैं और उन्होंने पार्वती की सखी विजया को रहस्य श्रवण करने के कारण शाप दे दिया है, इसी कारण पार्वती भी रुष्ट हैं। शिवजी की आज्ञा थी कि पार्वती के अतिरिक्त उस रहस्य कथा का श्रवण और कोई न करे किन्तु पार्वती ने अपनी सखी को चुपचाप किवाड़ के पीछे खड़ी होकर कथा सुनने के लिए कह दिया। कथा के बीच एक स्थल पर विजया हां हूं की ध्वनि उच्चारित कर बैठी। इस पर ध्यान योग से शिवजी को सब कुछ मालूम हो गया। निषेध करने पर भी छिपकर कथा सुनने वाली ~~को~~ वात शरीर धारिणी पिशाची बन जाये ऐसा शाप देकर शिवजी समाधिस्थ हो गये। पार्वती अपने कृत्य से लज्जित ~~हु~~ होकर अकेली ही वहां से बाहर निकल आईं। नन्दी के इतनी कथा कहने पर सिंहगर्जन और युद्ध की ध्वनि सुनाई देती है। शिवजी के दोनो पुत्र विनायक और स्कन्द भी उस भयंकर ध्वनि से त्रस्त होकर इधर उधर भागते हैं। स्कन्द विनायक से पूछते हैं कि दशमुख कौन है। विनायक बताते हैं कि ~~ह~~ दशमुख ब्रह्मा का प्रपौत्र है और कुबेर का सौतेला भाई है। उसने अपने सौतेले भाई कुबेर की अलकापुरी जीत ली है और उसी की विजय में मतवाला हो रहा है। इतने में सन्ध्या और रात्रि भी आकर बताती हैं कि राक्षसों ने अलकापुरी में बहुत विनाश किया है और यक्षेश्वर को भी मार डाला है। वहां का दृश्य बड़ा भयानक है। सन्ध्या, रात्री, विनायक, स्कन्द और भृङ्गिरिटि सभी भय~~कुल~~भीत होकर युद्ध की भयंकर ध्वनि को सुनते हैं और ऐसे विकट ~~समय~~ में शिव और पार्वती परस्पर रुष्ट हैं यह जान कर संतप्त होते हैं।

या कुन्देन्दु तुषार हार धवला, या शुभ्र वस्त्रावृता
या वीणावर दण्ड मण्डित करा, या श्वेत पद्मासना
या ब्रह्मा च्युत शंकर प्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता
सा माम् पातु सरस्वती भगवती निःशेष जाड्यापहा

उद्गात दशाननम् - ९६ पृष्ठों ~~के युक्त~~ का सात अङ्कों का ~~ब~~ पौराणिक नाटक है। प्रत्येक अङ्क से पहले विष्कम्भक है।
साहित्य चन्द्रशाला, तिरुवालङ्काडु तञ्जावूर डिस्ट्रिक्ट, मद्रास स्टेट से ~~द्व~~ अक्टूबर १९६८ में प्रकाशित हुआ। श्रीमुखम् - ~~श्री~~ जगद्गुरु श्री शंकराचार्य स्वामी (कांची कामकोटि पीठम्) ~~जी~~ ने लिखा है।
प्रस्तावना ~~[illegible]~~ ऋषिकेश के स्वामी शिवानन्द सरस्वती ने लिखा है। ~~९६ पृष्ठ का नाटक के अन्त में~~ शास्त्री ग्रन्थ के अन्त में ग्रन्थ में प्रयुक्त नये छन्दों की सूची दी गई है। जयार्या, शार्दूलविक्रान्तम्, पृथ्वी, मालिनी, शार्दूल ललित, पृथ्वीधर, विशालिनी आदि बिलकुल ~~नवीन~~ ~~[illegible]~~ अप्रयुक्त अप्रचलित ~~[illegible]~~ छन्दों का प्रस्तुत ग्रन्थ में प्रयोग किया गया है।

F-23